हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर सीरीज़

प्रमथ चौधरी

प्रकाशक—

चार यार

अनुवादक
मदनलाल जैन

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्रा.) लिमिटेड
हीराबाग, बम्बई-४.

प्रकाशक—

नाथूराम प्रेमी,
मैनेजिंग डायरेक्टर,
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्रा.) लिमिटेड,
हीराबाग, बम्बई–४.

एक रुपया पचास नये पैसे

प्रथम संस्करण
अगस्त, १९५९

१

प्रस्तुत पुस्तक बंगालके सुप्रसिद्ध लेखक प्रमथ चौधरीकी लोकप्रिय रचना 'चार यारेर गल्प' का अविकल अनुवाद है।

गुरुदेव रवीन्द्रको यह रचना अत्यन्त प्रिय थी और बंगलामें इसका प्रकाशन 'शान्ति-निकेतन' द्वारा हुआ है; इसीसे इसका महत्त्व स्पष्ट हो जाता है।

इसका कथानक तथा उसकी सांकेतिकता बंग-प्रतिभाकी अद्भुत मौलिकता और उसके मर्मस्पर्शी होनेके परिचायक हैं।

बंगालके लोकप्रिय लेखककी इस रचनाको आपतक पहुँचाते हमें अत्यन्त हर्ष होता है।

— प्रकाशक

चार यार

हम लोग उस दिन ताश खेलनेमें इतने मग्न हो गये थे कि कितनी रात बीत गई है इस तरफ हममेंसे किसीका भी ख़याल नहीं गया। हठात् घड़ीमें दस बजे, सुनकर हम सब चौंक उठे। ऐसी बेसुरी घड़ी कलकत्ता शहरमें दूसरी नहीं है। फूटी काँसेकी थालीसे भी ज़्यादा कर्कश उसकी आवाज़ है और उस आवाज़की झंकार बड़ी देर तक कानोंमें गूँजती रहती है—और जितनी देर रहती है उतनी देर बेचैन रखती है। इस घड़ीका कंठ हमारा पूर्व परिचित है, फिर भी उस दिन न जाने क्यों उसकी सनसनाहट मानो नयी होकर विशेष रूपसे हमारे कानोंको लगी।

हाथके पत्ते हाथमें ही रखकर क्या करें यह सोच रहे थे कि सतीश हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ और दरवाजेकी तरफ़ मुँह करके बोला—बाँय, गाड़ी जोतनेको बोलो।

पासके कमरेसे जवाब आया, जी हुकुम।

सेनने कहा, इतनी जल्दी क्या है। यह हाथ खेल ही लो ना।

सीतेश, वाह ! देख नहीं रहे हो कितनी रात हो गई है। मैं अब एक मिनट भी नहीं रुकूँगा। यों भी तो घर जाकर डाँट खानी पड़ेगी।

सोमनाथने पूछा, किसकी ?

सीतेश—स्त्रीकी—

सोमनाथने जवाब दिया—घरमें स्त्री क्या दुनियामें एक तुम्हारे ही है, और किसीके नहीं है ?

सीतेश—तुम लोगोंकी स्त्रियोंने अब आशा छोड़ दी है। घरपर तुम लोग कब आते हो, कब जाते हो, इससे उनका कुछ आता-जाता नहीं।

सेनने कहा—यह बात ठीक है। फिर भी एक दिन, ज़रा-सी देर हो गई तो उसके लिए—

सीतेश—ज़रा-सी देर ? मेरी मियाद आठ तककी है—और अब दस बजे हैं। और, यह तो एक दिनकी बात नहीं है, अकसर रोज़ ही घर पहुँचते-पहुँचते तोप दग जाती है।

और रोज़ ही डाँट खाते हो ?

और नहीं तो ?

तब तो वह डाँट अब देह-मनपर लगती भी नहीं होगी। क्या इतने दिनोंमें भी मनपर गट्टे नहीं पड़े ?

सीतेश—अब मजाक रहने दो, मैं चलता हूँ। गुड नाइट।

इतना कहकर वह कमरेमेंसे बाहर निकल ही रहा था कि बॉयने आकर ख़बर दी कि—कोचमेन लोग अभी गाड़ी जोतने नहीं माँगता। ओ लोग समजता, दस पाँच मिनटमें जोरका पानी आयेगा, सायेत हवा भी जोर करेगा। घोड़ा लोग अस्तबलमें

खड़ा खड़ा ऐसा ही डरता है। रास्तामें निकालनेसे जरूर भड़केगा, सायेत उखड़ जायेगा। कोई आधा घण्टा देखके तब सवारी देना ठीक हय।

यह सुनकर हम सब विचलित हो उठे; क्योंकि, एक सीतेश ही नहीं, हम सब लोगोंको भी घर जानेकी जल्दी थी। तत्काल आँधी-पानी आनेकी सम्भावना है या नहीं, यह देखनेके लिए हम चारों जने बरामदेमें गये। जाकर आसमानका जो चेहरा देखा उससे हमारी छाती बैठ गई और रोंगटे खड़े हो गये। इस देशके मेघमंडित दिनों और मेघमंडित रातोंका चेहरा हम सभी पहचानते हैं; लेकिन यह तो मानो किसी और ही दुनियाका और ही आसमान है—दिनका है या रातका, कहना कठिन है। सिरपर या आँखोंके सामने कहीं भी मेघ-घटा नहीं, आस-पास कहीं भी मेघोंका जोर नहीं, ऐसा लगा मानो किसीने समूचे आसमानको मेघोंका एकरंगा टोप पहना दिया है, जो काला भी नहीं है, गहरा भी नहीं है। उसके भीतरसे प्रकाश उसी तरह दिखाई दे रहा है जिस तरह मटमैले काँचके ढक्कनमेंसे दिखाई देता है। समूचे आसमानमें भरा हुआ ऐसा मलिन, ऐसा मरा-सा प्रकाश मैंने जीवनमें कभी नहीं देखा था। पृथ्वीपर उस रात मानो शनिकी दृष्टि पड़ी थी और उस प्रकाशके स्पर्शसे पृथ्वी मानो अभिभूत, स्तंभित और मूर्छित हो पड़ी थी। चारों तरफ नजर डालकर देखा कि पेड़-पौधे, घर-मकान, आँगन सब मानो किसी आसन्न प्रलयकी आशंकासे मुर्देके समान खड़े हैं, फिर भी उस प्रकाशमें सब मानो हँस रहे हैं। मुर्देके चेहरेपर हँसी देखकर मनुष्यके मनमें जिस प्रकारका कुतूहलमिश्रित आतंक उपस्थित होता है,

उस रातका दृश्य देखकर मेरे मनमें ठीक उसी प्रकारका कुतूहल और आतंक दोनोंका एक साथ समान रूपसे उदय हुआ था। मेरा मन चाहता था कि चाहे आँधी आवे, मेह बरसे, बिजली चमके, वज्र पड़े या और भी ज़्यादा भयंकर होकर कुछ आवे लेकिन सब अंधकारमें डूब जाय तो अच्छा हो। क्योंकि प्रकृतिका यह निश्चेष्ट दम घोंटनेवाला भाव मेरे लिए प्रति मुहूर्त असह्यसे असह्यतर होता जा रहा था; फिर भी मैं बाहरसे अपनी आँखें हटा नहीं पा रहा था। अवाक् होकर एकटक आकाशकी तरफ़ ताक रहा था, क्योंकि इस मेघ-क्षरित प्रकाशमें एक प्रकारका अपरूप सौन्दर्य था।

मैंने मुँह फिरा कर देखा कि मेरे तीनों साथियोंमें जो जिस प्रकार खड़ा था उसी प्रकार खड़ा है; सभीका मुँह गंभीर है, सभी निस्तब्ध हैं। यह दुःस्वप्न तोड़ देनेके लिए मैंने चीत्कार करके कहा—बॉय, चार अद्धा पेग लाओ। यह सुनते ही सभी मानो नींदसे जाग उठे। सोमनाथने कहा—मेरे लिए पेग नहीं, वारमूथ। इसके बाद हम सब अपनी-अपनी कुर्सियोंपर बैठकर अन्यमनस्क भावसे सिगरेट पीने लगे। फिर सब चुप हो गये। जब बॉय पेग लेकर हाजिर हुआ तब सीतेश बोल उठा—मेरे वास्ते आधा नहीं, पूरा।

मैंने हँसकर कहा, I beg your pardon, स्थूल पदार्थके साथ तरल पदार्थका इस जगह कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है यह बात भूल ही गया था।

सीतेशने तनिक नाराजीके स्वरमें जवाब दिया, तुम्हारी तरह मैं वामन अवतारका वंशधर नहीं हूँ।

नहीं, अगम्य मुनिके वंशधर हो। एक ही घूँटमें तुम सुरा-समुद्र पान कर सकते हो।

यह बात सुनकर वह अत्यन्त विरक्त होकर बोला, देखो राय, यह बेकारका मजाक इस समय अच्छा नहीं लगता।

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि समझ गया था कि बात ठीक है। बाहरका वह प्रकाश हमारे मनमें भी प्रवेश कर गया था और उसीके साथ हमारे मनका रंग भी बदल गया था। मुहूर्त भरमें हम सब नये ढगके मनुष्य बन गये थे। जिन सब मनोभावों-को लेकर हमारे दैनिक जीवनका कारबार चलता है वे सब भाव मनमें झर गये थे और उसके बदले दिनके प्रकाशमें जो कुछ गुप्त और सुप्त पड़ा रहता है वही जाग उठा था और फूट पड़ा था।

सेनने कहा, आसमानकी जो हालत है यह देखते हुए तो यही लगता है कि रात यहीं काटनी होगी।

सोमनाथने कहा, घंटा भर देखे बिना तो जाया नहीं जा सकता।

इसके बाद सब चुपचाप धूम्रपान करने लगे।

कुछ देर बाद सेन आसमानकी तरफ देखकर मानो अपने आप ही अपने आपसे बातें करने लगा और हम सब एकचित्त होकर सुनने लगे।

१—सेनकी कहानी

देख रहे हो, बाहर जो कुछ है वह सब आँखोंके सामने किस प्रकार निस्पंद निश्चेष्ट निस्तब्ध हो गया है, जो जीवन्त था वह भी मृतके समान दिखाई दे रहा है। विश्वका हृतिपण्ड मानो जड़पिण्ड हो गया है, उसे वाक्-रोध निश्वास-रोध हो गया है, रक्त-संचार बंद हो गया है; ऐसा लगता है मानो सब समाप्त हो गया है, और कुछ नहीं बचा है। तुम हम सभी जानते हैं कि यह बात सत्य नहीं है। इस दुष्ट विकृत कलुषित प्रकाशकी मायाने हमें अभिभूत कर रखा है इसीलिए इस समय हमारी आँखोंके सामने जो सत्य है वही मिथ्या लग रहा है। हमारा मन इंद्रियोंके इतने अधीन है कि ज़रा-सा रंग बदलते ही हमारे लिए विश्वके माने ही बदल जाते हैं। इसका प्रमाण मुझे पहले भी मिला है। मैंने किसी एक दिन आसमानमें एक और ही प्रकारका प्रकाश देखा था जिसकी मायासे पृथ्वी प्राणोंसे भरपूर हो उठी थी; जो मृत थे वे जीवंत हो उठे थे, जो मिथ्या था वह सत्य हो उठा था।

यह बहुत दिनोंकी बात है। तब मैंने एम० ए० पास किया ही था और घर बैठा था। कुछ कर नहीं रहा था, न कुछ करनेकी इच्छा ही थी। संसार चलानेके लिए रुपया कमानेकी आवश्यकता नहीं थी, गरज भी नहीं थी। मेरे अन्न-वस्त्रका ठिकाना था; इसके अलावा, तब तक मैंने विवाह नहीं किया था, और कभी करूँगा इस बातने मेरे मनमें स्वप्नमें भी जगह नहीं पाई थी। मेरी खुशकिस्मतीसे मेरे आत्मीय स्वजन मुझे नौकरी या विवाह करनेके लिए किसी प्रकार तंग नहीं करते थे। इसीलिए कुछ न करनेकी स्वाधीनता मुझे पूरी थी। सार यह कि मैं जीवनमें छुट्टी पा गया था और उस छुट्टीको मैं अपनी खुशीके मुताबिक लम्बी कर सकता था। सम्भव है, आप लोग मनमें सोच रहे हों कि इस प्रकारका आराम, इस प्रकार सुखकी अवस्था, अगर आप लोगोंके भाग्यमें होती तो आप लोग फिर उसे बदलना नहीं चाहते। लेकिन मेरे लिए यह अवस्था सुखकी तो थी ही नहीं, आरामकी भी नहीं थी। पहली बात तो यह कि मेरा शरीर उतना अच्छा नहीं था। कोई खास बीमारी नहीं थी फिर भी एक प्रच्छन्न जड़ताने क्रमशः मेरी समस्त देहको आच्छन्न कर रक्खा था। शरीरकी इच्छाशक्ति मानो दिन-दिन लोप होती जा रही थी। प्रत्येक अंगमें मैं एक अकारण और असाधारण श्रान्ति अनुभव करता था। अब समझमें आता है कि यह कुछ न करनेकी श्रान्ति थी। जो कुछ भी हो, डाक्टरोंने मेरी छाती पीठ ठोक ठाककर आविष्कार किया कि मेरा जो रोग है वह शरीरका नहीं बल्कि मनका है। बात ठीक है, फिर भी मनकी बीमारी क्या है यह किसी भी डाक्टर वैद्यके लिए पकड़ सकना असम्भव था।

क्योंकि जिसका मन था वही इसे ठीक तौरसे पकड़ नहीं पाता था। लोग जिसे दुश्चिन्ता अर्थात् संसारकी चिन्ता कहते हैं, मेरे वह नहीं थी और न कोई स्त्री ही मेरा हृदय चोरी करके भागी थी। सम्भव है, सुनेंगे तो विश्वास नहीं करेंगे, फिर भी बात यह संपूर्ण रूपसे सत्य है कि यद्यपि उस समय मेरा पूर्ण यौवन था फिर भी कोई वंग-युवती मेरी नज़रमें नहीं पड़ी थी। मेरे मनकी प्रकृति इतनी अस्वाभाविक हो गई थी कि उस मनमें किसी अवला, सरला नवनीत-कोमलाका प्रवेशाधिकार ही नहीं था।

मेरे मनमें सुख नहीं था, शान्ति नहीं थी, इसका कारण भी तो यही है कि मेरा मन संसारसे अलग हो पड़ा था। इसका अर्थ यह नहीं कि मेरे मनमें वैराग्य आ गया था। अवस्था ठीक इससे उलटी थी। जीवनके प्रति विराग नहीं, आत्यन्तिक अनुराग-वश ही मेरा मन चारों तरफ़से असम्वद्ध—अलग-सा हो गया था। मेरी देह थी इस देशमें और मन था यूरोपमें। उस मनपर यूरोपका प्रकाश पड़ा था और उस प्रकाशमें स्पष्ट देख पा रहा था कि इस देशमें प्राण नहीं है। हमारा काम, हमारी वातें, हमारी भावनाएँ, हमारी इच्छाएँ, सभी तेजोहीन, शक्तिहीन, क्षीण, रुग्ण, म्रिय-माण और मृतकल्प हैं। मेरी नज़रमें हमारा सामाजिक जीवन एक विराट कठपुतलीके नाचके समान दिखाई दिया। खुद गुड्डा-सा सजकर और अन्य एक सालंकारा गुड़ियाका हाथ पकड़ कर इस गुड़िया-समाजमें नृत्य करनेकी वात मनमें लाते हुए भी मुझे भय लगता था। जानता था, कि इससे तो मरना ही अच्छा है। किन्तु मैंने मरना नहीं चाहा, मैं चाहता था जीना—सिर्फ़ देहसे ही नहीं, मनसे भी जी उठना, खिल उठना और जल उठना चाहता था।

यही व्यर्थ आकांक्षा मेरे शरीर-मनको जीर्ण कर रही थी, क्योंकि इस आकांक्षाका कोई स्पष्ट विषय नहीं था, कोई निर्दिष्ट अवलंबन नहीं था। उस समय मेरे मनमें जो कुछ था वह एक प्रकारकी व्याकुलताके सिवा और कुछ नहीं। और उस व्याकुलताने एक काल्पनिक और आदर्श नायिकाकी सृष्टि कर डाली थी। सोचता था कि जीवनमें उस नायिकाका साक्षात् करते ही मैं सजीव हो उठूँगा। लेकिन यह भी जानता था कि इस मृतदेशमें उस जीवंत रमणीका साक्षात् कभी नहीं कर सकूँगा।

मनकी ऐसी अवस्थामें मुझे निश्चय ही अपने चारों तरफका काम-काज और आमोद-आह्लाद—कुछ भी अच्छा नहीं लगता था, इसीलिए मैं लोगोंका सहवास छोड़कर यूरोपीय नाटक-उपन्यासोंके राज्यमें वास करता था। उस राज्यके नायक-नायिका ही मेरे रात-दिनके संगी हो उठे थे, ये काल्पनिक स्त्री-पुरुष ही मेरे निकट-शरीरी हो उठे थे और रक्त-मांसके देहधारी स्त्री-पुरुष मेरे चारों तरफ छायाकी तरह घूमते-फिरते थे। लेकिन मेरे मनकी अवस्था कितनी ही अस्वाभाविक हो, मैंने अपनी सहजबुद्धि कभी नहीं खोई। मुझमें यह ज्ञान था कि मनके इस विकारसे उद्धार नहीं हुआ तो मैं देह-मनसे अमानुष हो जाऊँगा। इसीलिए, जिससे मेरा स्वास्थ्य नष्ट न हो उस बारेमें मैं पूर्ण सतर्क था। मैं जानता था कि यदि शरीरको स्वस्थ रख सका तो मन समयपर अपने आप ही प्रकृतिस्थ हो जायगा। इसीलिए मैं रोज चार-पाँच मील पैदल घूमता। मेरे घूमनेका समय सन्ध्याके बादका था। किसी दिन भोजनसे पहले, किसी दिन भोजनके बाद। जिस दिन खा-पीकर घूमने निकलता उस दिन घर लौटते-लौटते प्रायः रातके ग्यारह

बारह बज जाते। एक रातकी एक घटना मुझे आज भी बिसरी नहीं है, संभव है किसी दिन भी भूल नहीं सकूँगा, क्योंकि आज-तक मेरे मनमें वह बिल्कुल ताजी और करारी है।

उस दिन पूर्णिमा थी। मैं अकेला घूमता-फिरता जब गंगाके किनारे पहुँचा तब रातके करीब ग्यारह बजे थे। रास्तेपर लोग नहीं थे,फिर भी मेरा मन घर लौटना नहीं चाहता था। क्योंकि उस दिन जिस प्रकारकी चाँदनी खिली थी वैसी कलकत्तेमें मेरी समझसे दस बारह सालमें एक आध दिन ही दिखाई देती है। चाँदकी चाँदनीमें, अक्सर ऐसा लगता है, एक प्रकारका सुलानेका भाव है; वह चाँदनी धरतीपर, जलमें, छतपर, पेड़-पौधोंपर जहाँ भी पड़ती है वहाँ ऐसा लगता है मानो सब-कुछ सो रहा है। किन्तु उस रात आकाशमें प्रकाशकी बाढ़ आई थी। चंद्र-लोकसे असंख्य, अविरत, अविरल और अविच्छिन्न, एकके बाद एक, ज्योत्स्नाकी लहरें पृथ्वीपर आकर बिखर रही थीं। लहरोंसे तरंगित इस ज्योत्स्नासे दिग्‌दिगंत फेनिल हो उठा था, वह फेन शेम्पेनके फेनकी तरह अपने हृदयके आवेगसे उच्छ्‌वसित होकर हँसीके रूपमें चारों तरफ़ बिखर पड़ता था। मेरे मनपर इस प्रकाशका नशा छा गया था, इसीलिए मैं निरुद्देश्य भावसे घूम रहा था। मनमें एक स्पष्ट आनन्दके सिवा और कोई भाव या चिन्ता नहीं थी।

अचानक नदीकी तरफ़ मेरी निगाह गई। देखता क्या हूँ कि जहाजोंकी कतारेंकी कतारें इस प्रकाशमें तैर रही हैं। जहाजोंकी बनावट इतनी सुंदर हो सकती है, यह मैंने पहले कभी लक्ष्य नहीं था। उनकी उस लंबी छरहरी देहकी प्रत्येक रेखामें एक

अविराम गतिका विहग साकार हो रहा था—जिस गतिका मुँह असीमकी तरफ़ था और उसकी शक्ति अदम्य और अप्रतिहत थी। ऐसा लगता था मानो सागर-पारकी किसी परियोंकी कहानी-के विहग-विहगी आकर अब यहाँ पंख समेटकर जलपर सो रहे हों; और जो इस ज्योत्स्नाके साथ ही फिर अपने पंख पसारकर अपने देशको लौट जावेंगे। वह देश यूरोप है। जो यूरोप हम तुम आँखोंसे देख आये हैं वह यूरोप नहीं, बल्कि वह कविकल्पित राज्य जिसका परिचय मैंने यूरोपीय साहित्यमें पाया था। इस जहाजके इंगितसे वही परियोंकी कहानीका राज्य, वही रूपका राज्य, मेरे सामने प्रत्यक्ष हो उठा। मैंने ऊपर आँख उठाकर देखा कि समस्त आकाशमें हजारों जेसमिन हौथोर्न आदिके गुच्छेके गुच्छे खिल उठे हैं, झर रहे हैं और चारों तरफ़ श्वेत पुष्पोंकी वृष्टि हो रही है। उन फूलोंने पेड़-पौधे सब ढँक दिये हैं, वे पत्तोंकी फाँकोंमेंसे घासपर झर रहे हैं और राह-घाट सब कुछ ढँक दिया है। इसके बाद मुझे मनमें ऐसा लगा मानो आज रातको किसी मिरांडा या डेसडिमोना, बीट्रिस या टेसका दर्शन पाऊँगा और उसके स्पर्शसे मैं सजीव हो उठूँगा, जाग उठूँगा और अमर हो जाऊँगा। मैंने कल्पनाकी आँखोंसे स्पष्ट देखा कि मेरी वही चिर-आकांक्षित इटर्नल फेमिनिन सशरीर दूर खड़ी हुई मेरे लिए प्रतीक्षा कर रही है।

नींदकी खुमारीमें मनुष्य जिस प्रकार सीधा एक ही तरफ़ चलता चला जाता है, उसी प्रकार मैं भी चलते-चलते जब रास्तेके पास आ पहुँचा तब क्या देखता हूँ कि दूर मानो एक छाया टहल रही है। मैं उसी तरफ़ बढ़ने लगा। धीरे-धीरे वह

छाया शरीरी होने लगी और वह मनुष्य है, इसमें और कोई संदेह नहीं रहा। जब बहुत नज़दीक आ पहुँचा तब वह रास्तेके किनारे एक बेंचपर बैठ गई। और भी नज़दीक आकर क्या देखता हूँ कि बेंचपर जो है वह एक अंग्रेज़ रमणी है—पूर्ण-यौवना अपूर्व सुन्दरी। ऐसा रूप मनुष्यका नहीं हो सकता, वह मानो मूर्तिमती पूर्णिमा थी। मैं उसके सामने ठिठककर खड़ा हो गया और उसकी तरफ़ निर्निमेष दृष्टिसे ताकता रहा। देखता क्या हूँ कि वह भी एकटक मेरी तरफ़ देख रही है। जब उसकी आँखोंपर मेरी नज़र पड़ी तब देखा कि उसकी दोनों आँखें प्रकाशमें झलमला रही हैं। मनुष्यकी आँखोंमें इस प्रकारकी ज्योति मैंने जीवनमें और कभी नहीं देखी थी। वह ज्योति तारोंकी नहीं, चन्द्रकी नहीं, सूर्यकी नहीं, विद्युत्की थी। उस ज्योतिने चाँदनीको और भी उज्ज्वल कर दिया, चन्द्र-लोककी छातीमें मानो तड़ित-संचार हो उठा। विश्वका सूक्ष्म शरीर उस दिन एक मुहूर्तके लिए मेरे सामने प्रत्यक्ष हो उठा था। यह जड जगत् उस क्षण प्राणमय और मनोमय हो उठा था। मैंने उस दिन ईथरका स्पंदन अपने चर्म-चक्षुओंसे देखा, मैं दिव्य चक्षुओंसे देख पाया कि मेरी आत्मा ईथरके साथ एक सुरमें एक तानसे स्पंदित हो रही है। यह सब रातके इस प्रकाशकी माया है। इस मायाके प्रभावसे सिर्फ़ बाह्य जगत्का ही नहीं, मेरे अन्तर्जगत्का भी पूर्ण रूपसे रूपान्तर हो गया था। मेरा देह-मन आपसमें मिलमिलाकर एक मूर्तिमती वासनाका आकार धारण कर उठा था, और वह थी प्रेम और प्रेम पानेकी वासना। मेरे मन्त्रमुग्ध मनका ज्ञान, बुद्धि यहाँ तक कि चैतन्य भी, लोप हो गया था।

कुछ देर बाद मुझे अचेतन पदार्थकी तरह खड़ा देखकर वह रमणी किंचित हँसी। उसकी हँसीको देखकर मेरे मनमें कुछ साहस आया और मैं उसी बेंचपर उसके पास बैठ गया—एकदम सटकर नहीं, बल्कि तनिक दूर। हम दोनों ही चुप थे। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि मैं उस समय खुली आँखोंसे स्वप्न देख रहा था। वह स्वप्न जिस राज्यका है उस राज्यमें शब्द नहीं है, सिर्फ नीरव अनुभूति ही है। मैं स्वप्न देख रहा था, इसका प्रमाण यही है कि उस समय मेरे निकट सब असम्भव सम्भव हो उठा था। इस कलकत्ता शहरमें किसी बंगाली रोमियोंके भाग्यमें कोई विलायती जूलियट नहीं जुट सकती, यह ज्ञान मैं उस समय बिल्कुल खो बैठा था।

मुझे मन ही मन ऐसा लग रहा था कि इस रमणीके मनमें भी सम्भवतः मेरी ही तरह सुख नहीं था और वह भी एक ही कारणसे। सम्भवतः इसका मन भी उसके आसपासके परिचित समाजसे अलग हो पड़ा था और वह भी उसी अपरिचितकी आशा प्रतीक्षामें अपने दिन विषाद और अवसादमें काट रही थी, जिसके सामने आत्म-समर्पण करनेपर उसका मन और जीवन सराग और सतेज हो उठेगा। और आजकी इस मायाविनी पूर्णिमाके अपूर्व सौन्दर्यकी पुकार पर हम दोनों घरसे बाहर आ गये हैं। हमारे इस मिलनमें विधाताका हाथ है। अनादि कालमें इस मिलनकी सूचना हुई थी और अनंत कालमें भी इसका अन्त नहीं होगा। यह सत्य आविष्कार करते ही मैंने अपनी संगिनीकी तरफ मुँह फेरा। देखता क्या हूँ कि कुछ देर पहले जो आँखें हीरेकी तरह जल रही थीं, अब वे मोतीकी तरह सुकोमल हो

से शरीर झाड़कर उठ खड़ा हुआ। उस दिनकी उस रातकी छायामें उसकी देह अष्ट धातुसे गढ़ी हुई एक विराट बौद्धमूर्तिके समान लग रही थी। इसके बाद उस मूर्तिने अत्यन्त मीठे कोमल नारी-कण्ठसे बोलना शुरू किया। भगवान् बुद्धदेवने अपने प्रिय शिष्य आनन्दको स्त्री जातिके सम्बन्धमें किंकर्तव्यका जो उपदेश दिया था, सीतेशकी बात ठीक उसीकी पुनरावृत्ति नहीं है।

२—सीतेशकी कहानी

तुम सभी जानते हो कि मेरी प्रकृति सेनसे ठीक उलटी है। नारीको देखते ही मेरा मन अपने आप नरम हो जाता है। कितने सबल शरीरमें कितना दुर्बल मन रह सकता है, तुम्हारी रायमें मैं उसका जीता जागता उदाहरण हूँ। विलायतमें मैं हर महीने एक बार नये नये प्रेममें पड़ता था। इसके लिए तुम लोगोंने मेरा कितना मजाक उड़ाया है और तुम्हारे साथ मैंने कितना तर्क किया है। लेकिन अब मैं अपने मनको समझ पाया हूँ तो देखता हूँ कि तुम लोग जो कुछ कहते थे वह ठीक था। मैं उन दिनों प्रति-दिन ही प्रेममें क्यों नहीं पड़ा, मुझे इसीका आश्चर्य है। स्त्री-जातिकी देह और मनमें एक प्रकारकी ऐसी शक्ति है जो हमारे शरीर और

मनको नित्य खींचती है। यह आकर्षणी शक्ति किसीकी आँखोंकी चितवनमें होती है, किसीके चेहरेकी हँसीमे, किसीके गलेके स्वरमे और किसीकी देहकी गठनमें । इतना ही नहीं, उनके शरीरके कपड़ोंके रंग और गहनोंकी झकारमें भी, मेरा विश्वास है कि जादू है। मुझे याद आता है कि एक दिन एक स्त्रीको देखकर मै कातर हो पड़ा था। उस दिन वह फालसई रगकी साडी पहने हुए थी। इसके बाद और एक दिन उसे आसमानी रगकी साड़ी पहने देखकर मैं प्रकृतिस्थ हो गया। यह रोग आज भी पूर्ण रूपसे ठीक नहीं हुआ है। आज भी पाजेबकी झकार सुनकर मेरे कान खड़े हो जाते है, रास्तेमें कोई बन्द गाड़ीकी खिड़की तनिक-सी सरकी हुई देखकर मेरी आँखें अपने आप उस तरफ चली जाती हैं; ग्रीक स्टेच्यूके समान गठनकी किसी हिन्दुस्तानी रमणीको राह-घाटपर पीछेसे देखकर मैं मुँह फिरा कर उसका चेहरा देखनेकी चेष्टा करने लगता हूँ। इसके अलावा उस जमानेमें मेरे मनमें यह दृढ़ विश्वास था कि मैं उस जातिका पुरुष हूँ जिसके प्रति स्त्री-जाति स्वभावतः अनुरक्त हो जाती है। इतना होते हुए भी मैंने अपना या किसी औरका सर्वनाश नहीं किया, इसका कारण यही है कि जान ज्यान होने जितना साहस और शक्ति मेरे शरीरमें आज भी नहीं है और किसी दिन थी भी नहीं। दुनियाकी जितनी सुदरियाँ हैं वे सब आज भी रीति नीतिकी काँचकी आलमारियोंमें पूरी हुई हैं—अर्थात् उन्हें देखा जा सकता है, छूआ नहीं जा सकता। मैंने इस जीवनमें इस आलमारीका एक काँच भी नहीं तोड़ा, इसका कारण यह है कि उसके टूटनेपर सबसे पहले तो बड़ी जोरकी आवाज होती है—उसकी झंकार सारे मुहल्लेको सिरपर उठा

लेती है। दूसरे इससे हाथ-पैर कटनेका भी डर है। असल बात यह है कि सेनने इटर्नल फेमिनिनको एकके भीतर पाना चाहा था और मैंने अनेकके भीतर। नतीजा एक ही हुआ। उसे भी वह नहीं मिली, मुझे भी नहीं मिली। फिर भी दोनोंमें फ़र्क़ यह है कि सेनके समान कठोर मन किसी भी नारीके हाथमें पड़ने पर वह उस मनपर छेनीसे अपना नाम खोद देती है, किंतु मेरे समान तरल मनमें नारी मात्र अपनी उंगली डुबो कर अपनी खुशीके अनुसार आड़ी टेढ़ी रेखाएँ खींच सकती है, इसके साथ ही उस मनको क्षण कालके लिए ईषत् चंचल भी कर दे सकती है, लेकिन कोई दाग़ नहीं छोड़ जातीं। वह उंगली भी खिसक जाती है, वह रेखा भी लुप्त हो जाती है। इसीलिए आज देख रहा हूँ मेरे स्मृति-पटपर एकके सिवा किसी और नारीकी स्पष्ट छवि नहीं है। एक दिनकी एक घटना आज भी भूल नहीं सकता, क्योंकि जीवनमें ऐसी घटना दो बार नहीं घटती।

तब मैं लंदनमें था। महीना ठीक याद नहीं है, लगता है अक्तूबरका आखिर होगा या नवंबरकी शुरुआत। क्योंकि इतनी बात याद है कि तब घरके आतिशदानोंमें आग दीख गई थी। एक दिन सुबह सवेरे नींदसे जागकर मैंने बाहरकी तरफ़ देखा तो ऐसा लगा मानो संध्या हो गई है—मानो सूरज डूब गया है, फिर भी गैसकी बत्तियाँ नहीं जलीं। बात क्या है यह जाननेके लिए खिड़कीके पास जाकर देखा कि रास्तेपर जितने लोग चल रहे हैं सबका सिर छातोंसे ढका है। उनमें पुरुष-स्त्रीका फ़र्क सिर्फ कपड़े और चालके फ़र्कसे जाना जा सकता है। जो लोग छातेमें सिर समाये, किसी तरफ आँख उठाये बिना,

सरपट चल रहे हैं समझ गया कि वे पुरुष हैं और जो दाहिने हाथमें छाता पकड़े बाँये हाथसे गाउन घुटनों तक उठाये चाहा पंछीकी तरह फुदक-फुदककर चल रही हैं समझ गया कि वे स्त्रियाँ हैं। इसीसे अंदाज कर लिया कि बारिश शुरू हो गई है, क्योंकि इस बारिशकी धारा इतनी सूक्ष्म है कि आँखोंसे दिखाई नहीं देती और इतनी क्षीण है कि कानोंसे सुनी भी नहीं जा सकती।

ठीक है, यह चीज़ क्या कभी नज़र डालकर देखी है कि बरसात-के दिनोंमें विलायतमें बादल नहीं होते? सिर्फ आसमान यहाँ से वहाँ तक गंदला जाता है और उसकी छूतसे पेड़-पौधे अवसन्न हो जाते हैं और पथ घाट सब जगह कीचड़ पिच-पिच करने लगता है। ऐसा लगता है मानों यहाँकी वर्षा आधी ऊपरसे उतरती है और आधी नीचेसे भी उठती है और दोनों मिलकर समस्त आकाशमें एक कुश्री अस्पृश्य घिनौना कांड खड़ा कर देती हैं। सुबह उठते ही दिनका यह चेहरा देखकर मैं एक दम उदास हो गया। ऐसे दिनमें अंग्रेज़ कहा करते है कि उनकी खून करनेकी इच्छा होती है; इसलिए ऐसी अवस्थामें मेरी आत्महत्या करनेकी इच्छा हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

मैंने एक व्यक्तिके साथ रिचमंड जानेका आज वादा किया था लेकिन ऐसे दिन तो घरसे बाहर निकलनेकी भी प्रवृत्ति नहीं हुई, अतएव ब्रेकफास्टके बाद टाइम्स लेकर पढ़ने बैठ गया। मैंने उस दिन उस अखबारका प्रथम अक्षरसे लगाकर अंतिम अक्षर पर्यन्त पढ़ा, एक बात भी बाक़ी नहीं छोड़ी। उस दिन मैंने सर्व-प्रथम आविष्कार किया कि टाइम्सके गूदेकी अपेक्षा उसका छिलका, उसके प्रबन्धोंकी अपेक्षा उसके विज्ञापन ज्यादा मुखरोचक हैं।

उसके आर्टिकल पढ़नेके बाद मनमें जो बात उठती है उसका नाम है क्रोध, और उसके एडवरटिज़मेंट पढ़नेके बाद मनमें जो बात उठती है उसका नाम है लोभ। ख़ैर वह चाहे जो कुछ हो, लेकिन अख़बार खत्म होते न होते नौकरानी लंच लेकर हाजिर हो गई। जहाँ बैठा था वहीं बैठे-बैठे लंच समाप्त किया। तब दो बज गये थे फिर भी बाहरके चेहरेमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, क्योंकि यह विलायती वृष्टि अच्छी तरह पड़ना भी नहीं जानती, छोड़ना भी नहीं जानती। अब फर्क सिर्फ़ इतना पड़ा कि प्रकाश क्रम-क्रमसे इतना कम हो आया था कि बत्ती जलाये बिना अख़बारके अक्षर पढ़ सकना मुश्किल हो गया।

मुझे क्या करना है यह तै न कर पाया और कमरेमें चहलक़दमी करने लगा। कुछ देर बाद इससे भी विरक्ति हो आई। गैसकी बत्ती जलाकर फिर पढ़ने बैठा। पहले हाथमें ली कानूनकी किताब-एनसनका कन्ट्राक्ट। एक ही बातको दस बार पढ़ा फिर भी आफर और एक्सेप्टेंसका एक अक्षर भी दिमाग़में नहीं आया। मैंने पूछा कि तुम इसमें राज़ी हो? तुमने जवाब दिया कि मैं राज़ी हूँ!—इस सीधी-सी बातको मनुष्यने कितना जटिल कर रखा है, यह देखकर मनुष्यके भविष्यके बारे में हताश हो उठा। मनुष्य अगर वचन देकर पालता तो यह सब पापका बोझा हमें वहन नहीं करना पड़ता। उसके खुरोंमें दंडवत करके एनसनके कन्ट्राक्टको सेल्फके सर्वोच्च खनमें रख दिया। इतनेमें दिखाई दिया सामने एक पुराना पंच पड़ा हुआ है। उसे लेकर फिर बैठ गया। सच पूछो तो उसी दिन पंच पढ़कर हँसी आनेके बजाय क्रोध आने लगा। इस प्रकारका यंत्र-

निर्मित विनोद मनुष्य पैसोंसे खरीद कर पढ़ता है, यह देखकर अवाक् हो गया। दिव्य चक्षुओंसे दिखाई दिया कि पृथ्वीपर ऐसा दिन भी आयेगा जब 'मेड इन जर्मनी' की छाप लगा हुआ विनोद भी बाजारमें दनादन बिकने लगेगा। जो कुछ भी हो, मुझे चैतन्य हो गया कि इस देशके आकाशके समान इस देशके मनमें भी कभी कभार विद्युत् चमत्कार दिखाई दे जाता है—वह भी जिस प्रकार फीका होता है वैसा ही असम्बद्ध है। जैसे ही यह बात मनमें आई कि पंचको मैंने आतिशदानमें फेंक दिया और उसकी आग आनन्दसे हँस पड़ी। पंच जैसे एक जड़ पदार्थका उसने मान रख लिया यह देखकर मुझे ख़ुशी हुई। इसके बाद आतिशदानकी तरफ पीठ फेरकर कुछ देर तक आगकी गरमी लेता रहा। फिर एक पुस्तक लेकर बैठ गया। यह एक उपन्यास था। खोलते ही देखा कि डिनरका वर्णन है। टेबलपर कतारबन्द चाँदीके शमादान, ढेरके ढेर चाँदीके बरतन, दर्जन-दर्जन हीरेके समान पहलू कटे हुए चमचमाते हुए काँचके गिलास और उन सब गिलासोंमें स्पेन, फ्रांस, जर्मनीकी शराब है—जिनमेंसे किसीका रंग है चुन्नीका, किसीका पन्नेका, किसीका पुखराजका। इस उपन्यासके नायकका नाम अल्गर्नन और नायिकाका नाम मिलिसेंट है। एक ड्यूकका लड़का है और दूसरी मिलिओनेयरकी लड़की है; रूपमें अल्गर्नन विद्याधर है और मिलिसेंट विद्याधरी। कुछ दिनसे आपसमें प्रणयासक्त हुए हैं और यह प्रणय अत्यन्त पवित्र, अत्यन्त मधुर और अति गंभीर है। इस डिनरमें अल्गर्नन विवाह-का आफर करेगा। मिलिसेंट उसे एक्सेप्ट करेगी—कंट्राक्ट पक्का हो जायगा।

पुराने ज़मानेमें किसी वर्षाऋतुके दिन कालिदासकी आत्मा जिस प्रकार मेघपर सवार होकर अलकापुरीमें उपस्थित हुई थी, उसी प्रकार उस दुर्दिनमें मेरी आत्मा धूसर कोहरेपर सवार होकर इस उपन्यासवर्णित रुपहले राज्यमें जाकर उपस्थित हुई। कल्पनाकी आँखोंसे देखा कि वहाँ एक युवती विरहिणी यक्षपत्नीकी तरह मेरा पथ जोह रही है। और उसका रूप? उसका वर्णन करनेकी मेरी क्षमता नहीं है। वह मानो हीरे माणिकसे सजाई हुई सोनेकी प्रतिमा हो। यह कहनेकी ज़रूरत नहीं कि उसके साथ चार आँखें होते ही मेरे मनमें प्रेम उछल पड़ा। मैंने बिना कुछ कहे ही अपना मन प्राण उसके हाथों समर्पित कर दिया। उसने सस्नेह आदरसहित उसे ग्रहण कर लिया। परिणामस्वरूप जो कुछ पाया वह सिर्फ़ यक्षकन्या नहीं थी, यक्षका धन भी था। इसी समय घड़ीमें टन टन चार बजे और उसी क्षण मेरा दिवास्वप्न टूट गया। आँख खुलते ही देखा कि जहाँपर हूँ वह परियोंकी कहानीका राज्य नहीं है, बल्कि एक पिचपिच करता हुआ अंधकारमय कीचड़ पानीका देश है। अब और अकेले घरमें बैठे रहना मेरे लिए असंभव हो गया, मैं टोपी, छाता और ओवरकोट लेकर रास्तेपर निकल पड़ा।

जानते ही हो कि पानी हो चाहे आँधी लेकिन लंदनके रास्तोंपर लोगोंका चलना फिरना कभी बन्द नहीं होता, उस दिन भी नहीं हुआ। जहाँ तक दृष्टि जाती थी यही दिखाई देता था कि मनुष्यका स्रोत चल रहा है—सभी काले कपड़े पहने हैं, सिर पर काली टोपी है, पैरोंमें काले जूते हैं और हाथमें काला छाता। अचानक देखते ही मनमें ऐसा लगा मानो असंख्य अगण्य डेगेरो-

टाईपके चित्र पुस्तकोंमेंसे निकल कर रास्तेपर दिशा भूले इधर-उधर भागाभागी कर रहे हैं। इस लोकसमुदायमें घरकी अपेक्षा मुझे ज़्यादा अकेलापन लगने लगा क्योंकि इन हज़ारों लोगोंमें एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसे मैं पहचानता होऊँ, जिससे दो बातें कर सकूँ। और उस समय किसीके साथ दो बातें करनेके लिए मेरा मन अत्यन्त व्याकुल हो उठा था। मनुष्य मनुष्यके लिए कितना ज़रूरी है, यह बात ऐसे ही दिन ऐसी ही अवस्थामें अच्छी तरह समझमें आती है।

निरुद्देश भावसे घूमते-घूमते मैं होबर्न सर्कसके पास तक पहुँच गया। सामने ही एक छोटी-सी पुरानी किताबोंकी दूकान दिखाई दी जिसमें एक जीर्णशीर्ण वृद्ध गैसकी बत्तीके नीचे बैठा हुआ है। उसके शरीर पर जो फ्राक कोट था ऐसा लगा मानो उसकी उम्र उससे भी ज्यादा थी। जो किसी समय काला था वही अब हलदिया हो गया है। मैं अन्यमनस्क भावसे उसी दूकानमें घुस पड़ा। वृद्ध हड़बड़ाकर संभ्रमके साथ उठ खड़ा हुआ। उसका भाव देखकर मुझे ऐसा लगा मानो मेरे जैसा शौकीन पोशाक पहने कोई खरीददार इससे पहले उसकी दूकानकी छायाके नजदीक भी नहीं आया था। यह पुस्तक, वह पुस्तक, धूल झाड़ झाड़कर वह मेरे सामने लाकर रखने लगा। मैंने उसे ठहर जानेके लिए कहा और खुद ही यहाँ वहाँसे पुस्तकें उठाकर पन्ने उलट कर देखने लगा। किसी पुस्तकके पाँच मिनट तक चित्र देखे, किसी पुस्तकको दो चार लाइनें पढ़कर ही रख दिया। पुरानी पुस्तकें टटोलनेमें जो एक प्रकारका आनन्द है वह तुम सभी जानते हो। मैं एक मनसे उसी आनन्दका उपभोग कर रहा था कि

अचानक न जाने कहाँ से उस कमरेके भीतर एक प्रकारकी मधुर गंध मानो वर्षाके दिनोंमें वसंतकी हवाकी तरह आई। वह गन्ध जितनी क्षीण थी उतनी ही तीक्ष्ण भी थी। यह उसी प्रकारकी गन्ध थी जो अनजाने ही सीनेमें प्रवेश कर जाती है और समस्त अन्तरात्माको बेचैन कर देती है। यह गंध फूलोंकी नहीं, क्योंकि फूलोंकी गंध हवामें बिखर जाती है, आकाशमें फैल जाती है—उसकी कोई दिशा नहीं होती। लेकिन यह उस जातिकी गन्ध है जो एक सूक्ष्म रेखाको पकड़कर दौड़ी आती है और एक अदृश्य तीरकी तरह सीनेके भीतर जाकर धँस जाती है। मैं समझ गया कि यह गंध मृगनाभि कस्तूरीकी है, अर्थात् रक्त-मांसकी देहसे इस गंधकी उत्पत्ति है। मैंने तनिक त्रस्त भावसे मुँह फेरकर देखा कि पीछे गलेसे पाँव तक काले कपड़े पहने एक महिला पूँछ पर भार देकर खड़े हुए साँपकी तरह फन फैलाए खड़ी है। मैं उसके सामने मुँह बाये देख रहा हूँ, यह देखकर भी उसने अपना मुँह नहीं फिराया। पूर्वपरिचित व्यक्तिके साथ साक्षात्कार होनेपर लोग जिस प्रकार हँसते हैं उसी प्रकार उसके मुँहपर धीरे-धीरे हँसी फूटने लगी। लेकिन मैं हलफ उठाकर कह सकता हूँ कि उस महिलाके साथ इह जन्ममें मेरा कभी साक्षात्कार नहीं हुआ था। मैं इस हँसीका रहस्य न समझ सकनेके कारण किंचित् अप्रतिभ भावसे पीठ फिराकर खड़ा हो गया और एक पुस्तक खोलकर देखने लगा। लेकिन उसका एक वाक्य भी मेरी नज़रमें नहीं आया। मुझे ऐसा लगने लगा मानो उसकी दोनों आँखें छुरीकी तरह मेरी पीठपर चुभ रही हैं। इससे मुझे इतनी बेचैनी होने लगी कि मैं फिर उसकी तरफ घूमकर खड़ा हो गया। देखा,

वह दबी हुई हँसी उसके मुँहपर अब भी हिलती हुई है। अच्छी तरह निरीक्षण करके देखा कि वह हँसी उसके मुँहकी नहीं है—आँखोंकी है। इस्पातकी तरह नीली और इस्पातकी ही तरह कठोर दो आँखोंके कोनोंसे वह हँसी छुरीकी धारकी तरह चमक रही है। मैंने उस दृष्टिको टालनेकी जितनी बार चेष्टा की, मेरी आँखें उतनी ही बार फिर-फिरकर उसी तरफ़ गईं। सुना है कि किसी-किसी साँपकी आँखोंमें ऐसी आकर्षण शक्ति होती है जिसके खिंचावसे पेड़ परका पक्षी नीचे धरतीपर उतर आता है और हजार पंख पछाड़ने पर भी उड़ नहीं पाता। मेरे मनकी अवस्था उसी पक्षीके समान हो गई थी।

क्या बताऊँ, इस बीच मेरे मनपर एक नशा-सा सवार हो गया था और उस अपूर्व गंध और उन आँखोंकी दीप्ति इन दोनोंने मिलकर मेरे शरीर मन दोनोंको ही उत्तेजित कर डाला था। मेरा दिमाग उस समय ठिकाने नहीं था। इसलिए उस समय क्या कर रहा था यह नहीं जानता। सिर्फ इतनी बात याद है कि अचानक उसकी देहको मेरी देहका धक्का लग गया और मैंने माफी चाही। उसने हँसते हुए कहा कि मेरा कुसूर है, आपका नहीं। उसके गलेके स्वरसे मेरे सीनेका न जाने क्या ईषत् काँप उठा, क्योंकि वह आवाज़ बंसीकी नहीं थी, तंत्रीकी थी। उसमें ज्वार था। इसके बाद हम लोग आपसमें इस प्रकार बातचीत करने लगे मानो हम दोनों कबके परिचित बन्धु है। मै उसे एक पुस्तकके चित्र दिखाता हूँ, वह एक पुस्तक उठाकर मुझसे पूछती है कि मैंने पढ़ी है या नहीं। इसी प्रकार कितना समय कट गया, कुछ पता ही नहीं चला। उसकी बातचीतसे मालूम हुआ कि

उसका पठन पाठन मेरी अपेक्षा बहुत ज़्यादा है। जर्मन, फ्रेंच, इटालियन तीनों भाषाओंमें उसकी समान गति थी। मैं फ्रेंच जानता था, इसलिए अपनी विद्याका प्रदर्शन करनेके लिए एक फ्रेंच किताब उठाकर बीचमेंसे खोलकर पढ़ने लगा, वह मेरे पीछे खड़ी होकर मेरे कन्धोंके ऊपरसे मुँह बढ़ाकर देखने लगी कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। मेरे कंधेसे उसका चिबुक और मेरे गालोंसे उसके बाल स्पर्श कर रहे थे। उस स्पर्शमें फूलकी कोमलता और गन्ध थी। किन्तु उस स्पर्शने मेरे शरीर-मनमें आग-सी लगा दी। फ्रेंच पुस्तकमें जो कुछ पढ़ रहा था वह एक कविता थी—

Si vous n'avez rien a me dire
Pourquoi venir aupres de moi ?
Pourquoi me faire ce sourire
Qui tournerait la tete au roi ?

इसका स्थूल अर्थ यह है कि : यदि तुम्हें मुझे विशेष कुछ कहना नहीं है तो मेरे पास आये ही क्यों, और इस प्रकार मुस्कुराये ही क्यों, जिससे राजे रजवाड़ोंका भी सिर घूम जाय।

मैं क्या पढ़ रहा हूँ यह देखकर सुन्दरी हँस पड़ी। उस हँसीका झकोरा मेरे मुँहपर लगा और मुझे आँखोंसे धुँधला दीखने लगा। मेरा पढ़ना और आगे नहीं बढ़ सका। छोटे-से लड़केसे जब कोई ग़लती हो जाती है और वह पकड़ा जाता है तो सिर्फ़ हिल डुलकर, अप्रतिभ भावोंसे इधर-उधर देखता है और कोई बात नहीं कह पाता, मेरी अवस्था भी वैसी ही हो गई थी।

मैंने पुस्तक बन्द करके वृद्धको बुलाकर उसकी कीमत पूछी। उसने कहा, एक शिलिंग। मैं जेबसे मोरक्कोका पाकेट केस

निकालकर दाम देने जा ही रहा था कि देखता हूँ उसके भीतर सिर्फ पाँच गिन्नियाँ हैं, शिलिंग एक भी नहीं है। मैंने सब जेबें टटोल डालीं लेकिन एक भी शिलिंग नहीं मिला। इसी समय मेरी नव परिचिताने अपने पाकेटसे एक शिलिंग निकालकर वृद्धके हाथपर रखकर मुझसे कहा कि तुम्हें अब गिन्नी नहीं भुनानी पड़ेगी, वह पुस्तक मैं लेती हूँ। मैंने कहा, नहीं, ऐसा नहीं होगा। इस पर वह हँसकर बोली, आज रहने दो, अब फिर जब दुबारा मुलाक़ात हो तब मुझे लौटा देना।

इसके बाद हम दोनों ही बाहर निकल आये। रास्तेपर आनेके बाद मेरी संगिनीने पूछा कि अब तुम्हें कहीं खास जगह जाना है ?

मैंने कहा, नहीं।

तब चलो आक्सफोर्ड सर्कस तक मुझे पहुँचा दो। लंदनके रास्तोंपर अकेली चलनेपर सुंदरी स्त्रीको अनेक उपद्रव सहने पड़ते हैं।

यह प्रस्ताव सुनकर मुझे ऐसा लगा कि रमणी मेरी ओर आकृष्ट हुई है। मैंने खुशीसे फूलकर पूछा, क्यों ?

कारण यह कि पुरुषोंकी जात बन्दरकी जात है। रास्तेपर अगर कोई स्त्री अकेली चलती हो और उसके रूप यौवन भी हो, तो हजार लोगोंमेंसे पाँच सौ फिर-फिरकर उसकी तरफ़ देखेंगे, पचास उसकी तरफ़ देखकर मुस्करायेंगे और पाँच जबरदस्ती आलाप करनेकी चेष्टा करेंगे और अंतमें एक आकर कहेगा कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।

अगर यही हम लोगोंका स्वभाव है तो फिर किस भरोसेपर मुझे साथ लिये जा रही हो ?

वह जरा ठहरकर और मेरी तरफ़ देखकर बोली, तुमसे मैं नहीं डरती।

क्यों ?

वन्दरके अलावा और एक जातके पुरुष हैं जो हमारे रक्षक हैं।

वह कौन-सी जात है ?

अगर ग़ुस्सा न होओ तो कहूँ। क्योंकि बात सच होने पर भी प्रिय नहीं है।

तुम वे-हिचक कह सकती हो, क्योंकि तुमपर ग़ुस्सा होना मेरे लिये असंभव है।

वह है पालतू कुत्तेकी जात। इस जातके पुरुष हमारे पैरोंमें लोट-लोट जाते हैं, मुँहकी तरफ़ आँखें फाड़-फाड़कर देखते हैं, शरीरपर हाथ लगानेपर आनंदसे पूँछ हिलाते हैं और किसी और पुरुषको हमारे पास आने नहीं देते। बाहरके व्यक्तिको देखते ही पहले तो भों-भों करते हैं, इसके बाद दाँत निकालते हैं। इसपर भी अगर वह पीठ नहीं फिराता तो उसे काटने लगते हैं।

मैं क्या उत्तर दूँ यह सोच न पाकर बोला, ऐसा लगता है तुम्हारी भक्ति मेरी जातिपर बहुत ज्यादा है।

वह मेरे मुँहपर नज़र जमाये हुए बोली, भक्ति नहीं प्रेम है।

मुझे ऐसा लगा, मानो उसकी आँखें उसकी बातकी पुष्टि कर रही हैं।

इतनी देर हम आक्सफोर्ड सर्कसकी तरफ बढ़ रहे थे लेकिन ज्यादा दूर नहीं जा पाये थे, क्योंकि दोनों ही बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे।

उसकी अंतिम बात सुनकर मैं क्षण भरके लिए चुप हो गया। इसके बाद मैंने जो कुछ पूछा, उससे समझ सकोगे कि तब मेरी सुध बुध कितनी लोप हो गई थी।

तुम्हारे साथ अब और कब मुलाकात होगी ?

कभी नहीं।

अभी तो कुछ देर पहले कहा था कि जब फिर मुलाकात होगी—

वह तो तुम शिलिंग लेनेके लिए इतस्ततः कर रहे थे, इसलिए।

यह कहकर वह मेरी तरफ़ देखने लगी। मैंने देखा कि उसके मुँहपर वही हँसी है जिसका अर्थ मैं आज तक समझ नहीं पाया।

मैं उस समय स्वप्नचारीकी तरह ज्ञानशून्य होकर चल रहा था। उसकी सब बातें मेरे कानोंमें पहुँच रही थी पर मन तक नहीं। इसीलिए मैंने उसकी हँसीके जवाबमें कहा, तुम भले ही न चाहो पर मैं तुमसे फिर मुलाक़ात करना चाहता हूँ।

क्यों ? मुझसे क्या तुम्हें कोई काम है ?

सिवा मुलाकात करनेके और कोई काम तो नहीं है। असल बात यह है कि तुम्हें बिना देखे मैं नहीं रह सकूँगा।

यह बात जिस पुस्तकमें पढ़ी है वह नाटक है या उपन्यास ?

दूसरेकी पुस्तकमेंसे नहीं कह रहा, अपने दिलसे कह रहा हूँ। जो कह रहा हूँ वह पूर्ण सत्य है।

तुम्हारी उम्रके लोग अपने दिलके बारेमें नहीं जानते। मनका सत्य और मिथ्या जाननेमें भी समय लगता है। छोटे बच्चोंको जिस प्रकार मिठाई देखते ही खानेका लोभ होता है, बीस इक्कीस वर्षके बड़े लड़कोंको उसी प्रकार लड़की देखते ही प्रेम जागता है। यह सब यौवनकी झूठी भूख है।

तुम जो कुछ कह रही हो संभव है वह सब सत्य हो, लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम आज मेरे पास वसंतकी हवाकी तरह आई हो, मेरे मनमें आज फूल खिल उठे हैं।

वे यौवनके सीज़न फ्लावर हैं, दो घड़ीमें ही झर जाते हैं; उन फूलोंपर कोई फल नहीं लगता।

अगर यही सच है तो जो फूल तुमने खिलाये हैं उनसे मुँह क्यों फेरती हो? उनका जीवन दो घड़ीका है या चिरकालका, यह परिचय तो सिर्फ़ भविष्य ही दे सकता है।

यह बात सुनकर वह तनिक गंभीर हो गई। पाँच मिनट चुप रहकर बोली, तुम क्या यह सोचते हो कि तुम पृथ्वीके पथपर चिरकाल मेरे पीछे-पीछे चल सकोगे?

मेरा विश्वास है कि चल सकूँगा।

मैं तुम्हें कहाँ ले जा रही हूँ, यह जाने बिना ही?

तुम्हारी दीप्ति ही मुझे पथ दिखाती हुई ले जायगी।

मैं यदि मरीचिकाकी दीप्ति होऊँ। तब तुम एक दिन अंधकारमें दिशाशून्य होकर सिर्फ़ रोते फिरोगे।

मैं इसका कोई उत्तर नहीं ढूँढ़ सका। मैं नीरव हो गया हूँ

यह देखकर वह बोली, तुम्हारे मुँहपर एक ऐसी सरलता है जिससे मैं अच्छी तरह समझ रही हूँ कि इस समय तुम अपने मनकी सत्य बात ही कह रहे हो। इसीलिए मैं तुम्हारा जीवन अपने जीवनके साथ जोड़ना नहीं चाहती। इससे सिर्फ़ कष्ट पाओगे। जो कष्ट मैंने बहुत-से लोगोंको दिया है वह मैं तुम्हें नहीं देना चाहती। इसलिए कि एक तो तुम परदेशी हो और फिर तुम नितांत अर्वाचीन अपक्व हो।

इतनी देरमें हम आक्सफोर्ड सर्कस आ पहुँचे। मैंने किंचित् उत्तेजित भावसे कहा कि मैं अपने दिलसे जानता हूँ कि तुम्हें खोनेसे बढ़कर मेरे लिए और कुछ अधिक कष्टकर नहीं हो सकता। इसलिए अगर तुम मुझे कष्ट देना नहीं चाहती, तो बोलो अब कब मुलाक़ात होगी।

संभवतः मेरी बातमें ऐसी एक कातरता थी जिसने उसके मनको स्पर्श किया। उसकी आँखोंकी तरफ़ देखकर समझ गया कि उसके दिलमें मेरे प्रति माया ममता हुई है।

उसने कहा, अच्छा, तुम्हारा कार्ड दो, मैं तुम्हें चिट्ठी लिखूँगी।

मैंने उसी क्षण अपना पाकेट केस खोलकर एक कार्ड निकाल-कर उसे दिया। इसके बाद मैंने उसका कार्ड माँगा तो उसने कहा, साथ नहीं है। मैंने उसका नाम जाननेके लिए बहुत कहा, लेकिन वह किसी भी तरह बताने पर राजी नहीं हुई।

अंतमें बहुत अनुनय विनय करनेपर बोली, तुम्हारा एक कार्ड

दो, उस पर लिखे देती हूँ। लेकिन तुम्हें वचन देना होगा कि साढ़े छह बजनेसे पहले तुम उसे नहीं देखोगे।

तब छह बजकर बीस मिनट हुए थे। मैंने दस मिनट धैर्य रखनेका वचन दिया। उसने तब मेरा पाकेट केस मेरे हाथसे लेकर मेरी तरफ पीठ फिराकर, एक कार्ड निकालकर उस पर पेंसिलसे कुछ लिखा और फिर पाकेटमें रखकर केस मेरे हाथमें थमा दिया। पास ही जो एक तांगा खड़ा था उसपर वह उछलकर चढ़ गई और उससे तत्काल मार्बल आर्चकी तरफ़ चलनेके लिए कहा। देखते-देखते तांगा अदृश्य हो गया। मैं रीजेंट स्ट्रीटमें घुस पड़ा और पहले पहल जो रेस्तरां दिखाई दिया उसमें जाकर एक पाइंट शेंपेन लेकर बैठ गया। मिनट-मिनटपर घड़ी देखने लगा। दस मिनट दस घंटे प्रतीत हुए। जैसे ही साढ़े छह बजे उसी समय मैंने पाकेट केस खोलकर जो देखा उससे मेरा प्रथम प्रेम और शेंपेनका नशा दोनों एक साथ काफ़ूर हो गये। देखा, कार्ड तो है लेकिन गिन्नियाँ गायब हैं। कार्ड पर बहुत ही सुन्दर अक्षरोंमें नारी सुलभ लिखावटमें लिखा था : पुरुषोंके प्रेमकी अपेक्षा उनका रुपया मुझे ज़्यादा जरूरी है। अगर तुम मेरी कभी खोज न करो, तो यथार्थ बंधुत्वका परिचय दोगे।

मैंने सचमुच उसकी खोज खुद भी नहीं की, पुलिस द्वारा भी नहीं कराई। सुनकर आप लोगोंको आश्चर्य होगा कि उस दिन मेरे मनमें गुस्सेकी बजाय दुख हुआ; और वह भी अपने लिए नहीं बल्कि उसके लिए।

सोमनाथ इतनी देर जैसा कि उसका अभ्यास है एकके बाद एक अनवरत सिगरेट पी रहा था। उसके मुँहके सामने धूएँका

एक छोटा-मोटा मेघ-सा जम गया था। वह एकटक उसी तरफ देख रहा था, मानो उस धुएँमें उसने कोई नये तत्त्वका साक्षात्कार किया हो। पूर्व परिचयसे हम पहले ही जानते थे कि सोमनाथ जब सबसे ज्यादा अन्यमनस्क दिखाई देता है ठीक उसी समय वह सबसे ज्यादा सजग और सतर्क होता है। उस समय कोई भी बात उसके कानोंसे अलक्षित और कोई भी चीज़ उसकी आँखोंसे अगोचर नहीं रह पाती। सोमनाथका चौड़ा चकला रूखा चेहरा घड़ीके डायलके समान था, अर्थात् उसके भीतरकी कलें जिस वक्त जोशके साथ चलती रहतीं तब भी उसके चेहरे पर जरा भी परिवर्तन दिखाई नहीं देता था और उसकी एक भी रेखा विकृत नहीं होती थी। मीतिशकी बात पूरी होते न होते सोमनाथने तनिक भौंहें सिकोड़ीं। हम लोगोंने समझ लिया कि सोमनाथने अपने धनुषपर प्रत्यंचा चढ़ा ली है, अब तीरोंकी वर्षा शुरू होगी। हमें ज्यादा देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। उसने दाहिने हाथका सिगरेट बायें हाथमें लेकर अत्यन्त मुलायम फिर भी दानेदार गलेसे अपनी बात शुरू की। लोग जिस प्रकार गानेके लिए गला तैयार किया करते हैं, सोमनाथने उसी तरह बात करनेका गला तैयार किया था। उसके कंठ-स्वरमें कर्कशता या जड़ताका लेश भी नहीं था। उसका उच्चारण इतना साफ था कि उसके मुँहकी बातका प्रत्येक अक्षर गिना जा सकता था। हमारे इस साथीने साधारण लोगोंकी तरह सहज रूपसे बातचीत करनेका अभ्यास बहुत छोटी उम्रमें ही त्याग दिया था। उसकी मूँछें निकलनेसे पहले ही बाल पक गये थे। वह समय देखकर मित-भाषी या अल्पभाषी होता था। अपनी छोटी-सी बात वह शाणित

और तेज करके कहता और विशेष और बड़ी बात सजाकर। सोमनाथकी भावभंगी देखकर हम लोग एक लम्बी वक्तृता सुनने-के लिए तैयार हो गये। इसी समय हमारी नज़र सोमनाथके मुँह परसे उसके हाथपर गई। हम जानते थे कि वह अपनी अँगुलियोंको भी अपनी बातके अनुरूप तालपर नचानेका अभ्यस्त है।

३—सोमनाथकी कहानी

तुम सब बराबर मुझे फिलोसोफर कह कर मेरा मजाक उड़ाते रहे हो, मैं भी आज तक यह अपवाद बिना विरोध किये सिर झुकाकर स्वीकार करता रहा हूँ। नारी यदि कवित्वका एक मात्र आधार हो, और जो कवि नहीं है वही यदि फिलोसोफर हो, तब तो अवश्य मैं फिलोसोफर होकर ही जनमा हूँ। क्या किशोर अवस्थामें—और क्या यौवनमें स्त्री जातिके प्रति मेरा किसी तरहका खिंचाव—आकर्षण नहीं था। यह जाति मेरे मन या इंद्रियोंमेंसे किसीको भी स्पर्श नहीं कर पाती थी। नारीको देखकर मेरा मन नरम भी नहीं होता था, सख्त भी नहीं होता था। मैं इस जातिके जीवोंसे प्रेम भी नहीं करता था, भय भी नहीं खाता था। सार यह कि उनके बारेमें स्वभावतः पूरी तरह उदासीन था। मेरा

विश्वास था कि भगवानने मुझे पृथ्वीपर और चाहे जिस कामके लिए भेजा हो, लेकिन नायिका-साधनके लिए नहीं भेजा। लेकिन साधारण लोगोंके मनपर नारीका प्रभाव कितना ज्यादा है और स्थायी है इस बारेमें मेरे आँख कान दोनों ही समान रूपसे खुले थे। दुनियाके लोगोंका इन स्त्रियोंके पीछे-पीछे भागना मुझे जिस प्रकार लज्जाजनक लगता था, उसी प्रकार दुनियाके काव्य-की नारी-पूजा भी मुझे हास्यकर लगती थी। जो प्रवृत्ति पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि प्राणीमात्रमें है उसी प्रवृत्तिको यदि कवियोंने सुरमें चढ़कर उपमाओंमें सजाकर और छंदोंपर नचाकर उसकी मोहिनी शक्तिको इतना बढ़ा-चढ़ा नहीं दिया होता, तो मनुष्य उसका इतना दास नहीं बनता। अपने हाथोंसे गढ़े हुए देवताके पैरोंमें मनुष्य जब सिर झुकाता है, तब अभक्त दर्शक यह देखकर हँसता भी है, रोता भी है। इसी इटर्नल फेमिनिनकी उपासनाने ही तो मनुष्यके जीवनको एक ट्रेजी-कोमेडी कर रखा है। एक अस्वाभाविक रंगकी दैहिक प्रवृत्ति ही मनुष्यको नारी-पूजाका मूल है, यह बात तुम लोग कभी स्वीकार नहीं करोगे। तुम्हारी रायमें जो ज्ञान पशु-पक्षी पेड़-पौधोंके भीतर नहीं है, सिर्फ मनुष्यमें है अर्थात् सौंदर्य-ज्ञान, वही इस पूजाका असली कारण है। और ज्ञान नाम-की वस्तु सचमुचमें मनका धन है, शरीरका नहीं। इस बारेमें मैं तुम्हारे साथ कभी एकमत नहीं हो सका। इसका कारण यह है कि या तो रूपके संबंधमें मैं अंधा था या तुम अंधे थे।

मेरी धारणा है कि प्रकृतिके हाथों गढ़ी हुई चीज चाहे वह जड़ हो चाहे चेतन, किसीमें भी यथार्थ रूप नहीं है। प्रकृति कितनी बड़ी कारीगर है इसका परिचय इसके द्वारा सृष्ट इस

ब्रह्मांडसे ही मिलता है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी यहाँ तक कि उल्का सब एक ही साँचेमें ढले हुए हैं, सब गोलाकार हैं—वे भी पूर्ण गोल नहीं हैं, सभी ईषत् टेढ़े-बाँके, यहाँ वहाँसे बैठे चपटे हैं। इस पृथ्वीपर जो कुछ सर्वांग सुन्दर है वह मनुष्यके हाथोंसे ही गढ़ा जाता है। एथेंसके पार्थेननसे लगाकर आगरेके ताजमहल तक इसी सत्यका परिचय देते हैं। कवि लोग कहते हैं कि विधाता उनकी प्रियाओंको निर्जनमें बैठकर निर्माण करते हैं। लेकिन विधाताकी बनाई हुई यह निर्जन-निर्मित कोई भी प्रिया रूपमें ग्रीक शिल्पियोंकी छेनीसे बनाई हुई पाषाण मूर्तिके सामने नहीं खड़ी हो सकती। तुम लोगोंकी अपेक्षा मेरा रूपज्ञान बहुत ज्यादा था इसीलिए किसी मर्त्य नारीका रूप देखकर मेरे अंतरमें कभी हृद्‌रोग नहीं हुआ। यह स्वभाव और यह बुद्धि होते हुए भी मैं जीवन-पथपर इटर्नल फेमिनिनसे कन्नी काटकर नहीं जा सका। मैंने उसे खोजा नहीं—न एकमें न अनेकमें। लेकिन उसने मुझे खोज निकाला था। उसके द्वारा मुझे यह शिक्षा मिली कि स्त्री-पुरुषके इस प्रेमका पूरा अर्थ मनुष्यकी देहमें भी नहीं पाया जाता, मनमें भी नहीं मिलता। क्योंकि उसके मूलमें जो कुछ है वह एक विराट रहस्य है—उस अवस्थाका संस्कृत और बंगाली दोनोंमें अर्थ है; अर्थात् प्रेम is both a mystory and a joke।

एक बार लंदनमें मैं महीने भर तक भयानक अनिद्रा रोगसे पीड़ित रहा। डाक्टरोंने इल्फ्रेकोम्ब जानेकी सलाह दी। सुना कि इंग्लैंडके पश्चिमी समुद्रकी हवा लोगोंकी आँखों और मुँहपर स्नेहसे हाथ सहला देती है, बालोंको बिखेर देती है। उस हवाके स्पर्शके बाद जागते रहना कठिन हो जाता है, सोना सहज हो जाता है।

मैं उसी दिन इलफ्रेकोम्ब रवाना हो गया। इसी यात्राने मुझे जीवन-के एक अनजाने देशमें पहुँचा दिया।

मै जिस होटलमें आकर उतरा था वह इलफ्रेकोंबका सबसे बड़ा फैशनेबल होटल था। साहब मेमोंकी भीड़के मारे वहाँ हिलने-डुलनेको भी जगह नहीं थी, पैर बढ़ाते ही किसी न किसी-का पैर दब जाता था। ऐसी हालतमें मैं दिन बाहर ही काट देता था। इससे मुझे कोई कष्ट नहीं था क्योंकि उन दिनों वसंत ऋतु थी। प्राणोंके स्पर्शसे जड़-जगत् मानो हठात् सिहरित, पुलकित और उद्वेलित हो उठा था। इस संजीवित संदीपित प्रकृतिके ऐश्वर्य और सौंदर्यकी कोई सीमा नहीं थी। सिरपर सोनेका आसमान था, पैरोंके नीचे हरी घासका मखमली गलीचा था, आँखोंके सामने हीराकसका समुद्र था और दायें-बायें सिर्फ फूलों-के जवाहरातोंसे खचित पेड़-पौधे थे। उन पुष्प रत्नोंमें किसीका रंग श्वेत, किसीका लाल, किसीका गुलाबी और किसीका बैगनी था। विलायतमें देखा होगा कि वसंतका रंग सिर्फ जल, स्थल और आकाशपर ही नहीं लगता, हवाकी देहपर भी लगता है। प्रकृतिके रूपमें अंग-सौष्ठवकी रेखाओंकी सुषमाका जो अभाव है उसे वह इस रंगकी बहारसे पूरा कर लेती है। इस खुले आसमान-के नीचे इस रंगीन प्रकृतिके साथ मैंने दो दिनमें ही मुहब्बत कर ली। उसका साथ मेरे लिए काफी था, मैंने क्षण भरके लिए भी किसी मानवी साथीका अभाव महसूस नहीं किया। तीन-चार दिन जान पड़ता है मैंने किसी मनुष्यके साथ एक भी बात नहीं की। क्योंकि वहाँ मैं किसी भी जन प्राणीको नहीं पहचानता था,

और किसीके साथ गले पड़कर बातचीत करना मेरी प्रकृति नहीं था।

इसके बाद एक दिन रातको डिनर खाने जा रहा था कि बरामदेमें किसीने मुझे गुड इवनिंग कहकर संबोधित किया। मैंने देखा कि सामने ही एक भद्र महिला रास्ता रोके खड़ी है। उम्र पचाससे कम नहीं होगी, तिसपर वह जैसी लंबी थी वैसी ही चौड़ी भी। इसीके साथ नजर आया कि वह चमकदार काली साटिनकी पोशाक पहने है और उंगलियोंमें रंग बिरंगे नाना आकारके कीमती रत्नोंकी अंगूठियाँ हैं। फौरन समझमें आ गया कि उसके और चाहे जिस चीजका अभाव हो लेकिन पैसेका अभाव नहीं है। छोटे लोगोंकी लाट साहबीका ऐसा आँखोंमें उंगली देनेवाला चेहरा विलायतमें ज्यादा नहीं दिखाई देता। उसने दो बातोंमें ही मेरा परिचय लेकर मुझसे अपने साथ डिनर खाने चलनेका अनुरोध किया, और भद्रताकी खातिर मैंने स्वीकार कर लिया।

हम लोग खानेके कमरेमें जाकर बैठे ही थे कि इतनेमें एक युवती गजेन्द्रगतिसे आकर हमारे सामने उपस्थित हुई। मैं अवाक् होकर उसके सामने ताकता रहा, क्योंकि प्रत्यक्षमें रमणीका ऐसा नमूना उस देशमें भी अत्यन्त विरल है। लम्बी वह सीतेश जितनी थी सिर्फ़ रंगमें सीतेश जिस प्रकार श्याम है वह उसी प्रकार श्वेत थी—उस श्वेत रंगमें अन्य किसी रंगका चिह्न भी न था—न गालोंपर, न होठों, न बालों, न भौंहोंपर। उसके सफेद कपड़ोंसे उसके चमड़ेमें फर्क करनेका कोई उपाय नहीं था। इस चूनेकी मूर्तिके गलेमें जो सोनेका एक मोटा हार और दोनों हाथोंमें

उसीके समान चेन-ब्रेसलेट थीं उन्हींपर मेरी आँखें कुछ देर इतस्ततः करनेके बाद जा टिकीं। ऐसा लगा मानो ब्रह्मदेशके किसी राज-अंत पुरसे एक श्वेतहस्तिनी अपनी स्वर्णशृङ्खला तोड़-कर भाग आई है। मैं उसे देखकर इतना हड़बड़ा गया था कि उसकी अभ्यर्थना करनेके लिए खड़ा होना भी भूल गया और जैसा बैठा था वैसा ही बैठा रहा। लेकिन इस तरह ज्यादा देर नहीं रहना पड़ा। मेरी नवपरिचिता प्रौढ़ा संगिनीने चेयरसे उठकर उस रक्तमांसके मौन्युमेंटके साथ मेरा परिचय इस प्रकार करा दिया—

मेरी कन्या मिस हिल्डेसहाइमर। मिस्टर—?

सोमनाथ गंगोपाध्याय।

मिस्टर गांगो—गागो—गागो—

मेरे नामका उच्चारण इससे ज्यादा आगे नहीं बढ़ सका। मैं श्रीमतीसे हाथ मिलाकर बैठ गया। जेली पर हाथ पड़ जानेपर शरीर जिस प्रकार सिहर उठता है मुझे भी ऐसा ही अनुभव होने लगा। इसके बाद मैडम मेरे साथ बातचीत करने लगी, मिस चुप ही बैठी रही। वह बोल नहीं रही थी इसका यह मतलब नहीं कि उसका मुँह भी बंद था। चर्वण, चोपन, लेहन, पान आदि दंत, ओष्ठ, रसना, कंठ, तालुके असली काम सब पुरजोर चल रहे थे। मछली, मांस, फल, मिष्टान्न सब चीजों पर उसकी समान रुचि थी। जिस विषयपर आलाप शुरू हुआ उसमें योग देनेका, शायद उसका अधिकार नहीं था।

इसी समय मैंने युवतीको एक बार अच्छी तरह देखा! उसके समान बड़ी आँखें योरपमें लाखोंमें एक स्त्रीके भी दिखाई नहीं देतीं—वे आँखें जितनी बड़ी थीं उतनी ही सजल, जितनी निश्चल थीं उतनी ही निस्तेज। ये आँखें देखने पर सीतेश प्रेममें पड़ जाता और सेन कविता लिखने बैठ जाता। तुम लोगोंकी भाषामें ये आँखें विशाल-तरल-करुण प्रशांत हैं। तुम लोग ऐसी आँखोंमें माया, ममता, स्नेह, प्रेम आदि न जाने क्या क्या मनके भाव देख पाते हो। लेकिन उनमें मैं जो कुछ देख पाता हूँ वह है पालतू जानवरका भाव। गाय, बैल, बकरी, भेड़ आदि सबकी इसी तरहकी आँखें होती हैं—उनमें अंतरकी दीप्ति भी नहीं है, प्राणोंकी स्फूर्ति भी नहीं है। उसके पास बैठनेसे मेरे सारे शरीर-में बेचैनी हो रही थी और उसकी माँकी बातें सुनकर तो मेरे मनमें उससे भी ज्यादा बेचैनी होने लगी। जानते हो, उसने मुझे आज क्यों पकड़ा था? संस्कृत शास्त्र और वेदान्त दर्शनपर आलोचना करनेके लिए। मेरा अपराध यह था कि मैं संस्कृत बहुत कम जानता हूँ और वेदान्तका वे तो दूर अलिफ तक नहीं जानता, यही बात एक यूरोपीय महिलाके सामने स्वीकार करनेमें सकुचा रहा था। फलस्वरूप जब वह मुझसे बहस करने लगी तो मैंने झूठे हवाले देना शुरू कर दिया। श्वेताश्वतर उपनिषद श्रुति है या नहीं, गीताका ब्रह्मनिर्वाण और बौद्ध निर्वाण ये दोनों एक हैं या नहीं, इन सबका जवाब देते-देते मैं नितान्त विपन्न हो पड़ा। इन सब विषयोंपर हमारे पण्डित समाजमें जो बड़ा विषम मतभेद है, मैं घुमा फिराकर बार बार यही एक बात कहता जाता था। मैं किस मुश्किलमें पड़ गया हूँ यह बात मेरी प्रश्नकर्त्री समझ

या न समझे, लेकिन मुझे लगा कि यह बात मेरे पासके टेबल पर बैठी हुई एक महिला खूब समझ रही थी।

उस टेबलपर वह महिला एक आंडील चेहरेके पुरुषके साथ डिनर खा रही थी। उस भद्र पुरुषके चेहरेका रंग इतना लाल था कि देखने पर ऐसा लगता था मानो किसीने अभी हाल ही उसकी खाल उधेड़ी है। पुरुष जो कुछ बोलता था वह सब उसकी मूँछोंमें ही अटक जाता था, हमारे कानों तक नहीं पहुँच पाता था। उसकी संगिनी भी उसकी बातोंपर कान दे रही थी या नहीं, इस बारेमें मुझे संदेह है। क्योंकि, उस महिलाने हमारी तरफ एक बार भी मुँह नहीं फेरा था, फिर भी उसके चेहरेके भावसे लग रहा था कि वह हमारी बात ही कान लगाये सुन रही है। जब कोई प्रश्न पूछा जानेपर उसका क्या जवाब दूँ यह सोचने लगता था, तब देखता था कि वह अपना आहार बंद करके सामनेके प्लेटकी तरफ अन्यमनस्क भावसे देख रही है। और जैसे ही मैं तनिक सजा सजाकर जवाब देता था तो देखता था कि उसकी आँखोंमें एक सकौतुक हँसी दिखाई दे रही है। असलमें हमारी यह आलोचना सुनकर उसे खूब मजा आ रहा था। लेकिन मैं सिर्फ यही सोच रहा था कि इस डिनर-भोगरूप कर्मभोगसे कब छुट्टी पाता हूँ। इसके बाद जब टेबुल छोड़कर सभी लोग उठ खड़े हुए और उसीके साथ मैं भी भागनेकी तैयारी करने लगा कि वही विलायती ब्रह्मवादिनी गार्गी मुझसे बोली, तुम्हारे साथ हिन्दू दर्शनकी आलोचना करके मैंने इतना आनन्द और शिक्षा पाई है कि अब मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकती। जानते हो उपनिषद् ही मेरे मनकी औषधि और पथ्य है। मैं मन ही मन कहने लगा, तुम्हें किसी

औषधि या पथ्यकी आवश्यकता है, यह तुम्हारा चेहरा दे
भी नहीं मालूम पड़ता । जो कुछ भी हो, तुम जितनी बड़ी
जर्मनीकी लाइब्रेरियोंमें बेकार की मूर्ख वेदान्तशास्त्र सेवन करो, मैं
मुझे उसका अनुपान क्यों जुगाड़ करना पड़ेगा, यह समझमें न
आता । उसका मुंह चलता ही रहा । वह बोली, मैंने
डासनने वेदान्त पढ़ा है, लेकिन तुम जितने पंडितोंके नाम ले
हो और जितने विभिन्न मतोंके बारेमें जानते हो, मेरे गुरु उ
चौथाईका चौथाई भी नहीं जानते । वेदान्त पढ़ना तो कि
राज्यके हिमालयपर चढ़ना है, शंकर तो ज्ञानके गौरीशंकर हैं ।
वहाँ कैसी शांति, कैसी शीतलता, कैसी शुभ्रता और कैसी ऊ
है । विचार करनेसे ही सिर चकराने लगता है । हिन्दू द
जितना ऊँचा है उतना ही विस्तृत है, यह बात मैं पहले से
जानती थी । चलो, तुमसे इन सब अपरिचित पंडितों और अनजा
पुस्तकोंके नाम लिख लूँगी ।

यह बात सुनकर मैं आतंकित हो उठा, क्योंकि शास्त्रमें क
है कि झूठ बात 'शतं वद मा लिख' । यह बतानेकी ज़रूरत न
कि मैंने जितनी पुस्तकोंके नाम लिये थे उनमेंसे एक भी मौजू
नहीं है, और जितने पंडितोंके नाम लिये थे वे सब सशरीर जीवि
होनेपर भी उनमेंसे एक भी शास्त्री नहीं था । मेरे परिचित सा
गुरु पुरोहित दैवज्ञ कुलज्ञ आचार्य यहाँ तक कि रसोइया ब्राह्मण
भी मेरे प्रसादसे महामहोपाध्याय हो गये थे । ऐसी परिस्थितिमें
मैं क्या करूँ यह सोच नहीं पा रहा था और 'न ययौ न तस्थौ'
अवस्थामें था कि इसी समय पासके टेबलसे वही महिला उठकर
। हुआ चेहरा लेकर मेरे सामने आकर खड़ी हुई और बोली

वाह, तुम यहाँ ? अच्छे तो हो ! बहुत दिनोंसे तुम्हें देखा नहीं। चलो, मेरे साथ ड्राइङ्ग रूममें, तुमसे कुछ बातें करनी है।

मै बिना कुछ कहे उसके पीछे हो लिया। सबसे पहले मैने लक्ष्य किया कि इस रमणीके शरीरकी गठन और चलनेकी भंगीमें शिकारी चीतेके समान एक प्रकारका लपलपाता हुआ भाव है। इस बीच कनखियोंसे एक बार देख लिया कि गार्गी और उसकी कन्या मुँह बाये मेरी तरफ देख रही हैं, मानो किसीने उनके मुँह-का ग्रास छीन लिया हो और वह भी इतनी तेजीसे कि उन्हें अपना मुँह बन्द करनेका अवसर ही नहीं मिला।

ड्राइंग रूममें प्रवेश करते ही मेरी इस विपद्-तारिणीने मेरी तरफ किंचित् मुड़कर कहा—घंटे भरसे तुमपर जो उत्पीड़न हो रहा था वह मुझसे सहन नहीं हो रहा था, इसलिए इन दोनों जर्मन पशुओंके हाथसे तुम्हारा उद्धार करके ले आई हूँ। तुम्हारी कितनी बड़ी विपद् दूर हो गई है, यह तुम नहीं जानते। माँके दर्शनकी पारी खत्म होते ही, कन्याके कवित्वका पाला शुरू होता। तुम इन सब चिथड़-पुतलियोंको नहीं पहचानते। इन सब स्त्री रत्नोंकेजीवनका एक मात्र उद्देश्य है—येन केन प्रकारेण पुरुषोंके गल-लग्न होना। पुरुषको देखते ही उनके मुँहमें पानी भर आता है, आँखोंमें तेल उतर आता है, विशेषत वह अगर देखनेमें सुन्दर हो।

मैने कहा, अनेक अनेक धन्यवाद। किन्तु तुमने अन्तमें जिस विपदाकी बात कही है, मेरे बारेमें उसकी कोई आशंका नहीं थी।

क्यों ?

सिर्फ यही जाति नहीं, मैं समग्र स्त्री जातिके हाथोंकी सीमासे बाहर हूँ।

तुम्हारी उम्र कितनी है ?

चौबीस।

क्या तुम कहना चाहते हो कि आजतक कोई स्त्री तुम्हारी आँखोंमें नहीं चढ़ी, और तुम्हारे मनमें नहीं बसी ?

यही बात है।

असत्य बोलना तुमने एक आर्ट बना लिया है, इसका प्रमाण मैं इतनी देरसे पा रही हूँ।

यह तो विपदामें पड़नेके कारण।

तब यही बात सच है कि एक दिनके लिए भी कोई तुम्हारे नयन-मनको आकर्षित नहीं कर सका ?

हाँ, यही सत्य है। क्योंकि उन नयनोंको और उस मनको एक व्यक्तिने हमेशाके लिए मुग्ध कर रक्खा है।

सुन्दरी है ?

जगत्में उसकी तुलना नहीं है।

तुम्हारी दृष्टिमें ?

नहीं, जिसके दृष्टि है उसीकी दृष्टिमें।

तुम उससे प्रेम करते हो ?

करता हूँ।

वह तुमसे प्रेम करती है ?

नहीं।

कैसे जाना ?

उसमें प्रेम करनेकी क्षमता नहीं है।

क्यों ?

उसके हृदय नहीं है।

इतनेपर भी तुम उसमे प्रेम करते हो ?

इतनेपर भी नहीं, इसीलिए मैं उससे प्रेम करता हूँ। औरोंका प्रेम एक प्रकारका उपद्रव है।

उसका नाम-धाम क्या जान सकती हूँ ?

अवश्य। उसका धाम पेरिस है और नाम वेनस द मिलो है।

यह उत्तर सुनकर मेरी नई सखी मुहूर्त भरके लिए अवाक् हो गई। इसके बाद ही हँसकर बोली, तुम्हें बातें बनाना किसने सिखाया है ?

मेरे दिलने।

यह दिल कहाँसे पाया ?

जन्मसे।

और क्या तुम्हारा विश्वास है कि इस दिलका कोई बदलाव नहीं होगा ?

यह विश्वास त्याग करनेका आज तक तो कोई कारण उपस्थित नहीं हुआ।

अगर वेनस द मिलो जीवित हो उठे तो ?

तो मेरा मोह टूट जायगा।

और हममेंसे किसीका अंतर अगर पत्थर हो जाय ?

यह बात सुनकर मैंने उसके मुँहकी तरफ एक बार अच्छी तरहसे देखा।

मेरे स्टेच्यु-परायण नेत्र इससे पीड़ित या व्यथित नहीं हुए। उसके मुँहपरसे अपनी दृष्टि हटाकर मैंने उत्तर दिया, तब मैं, संभव है, उसकी पूजा करूँगा।

पूजा नहीं, दासत्व।

अच्छा, यही सही।

पहलेसे अगर जानती कि तुम इतनी फिजूल बकवास कर सकते हो तो मैं उनके हाथोंसे तुम्हारा उद्धार करके नहीं लाती। जिसे जीवनका कोई ज्ञान नहीं है उसके लिए दर्शन बकते रहना ही उचित है। अब आओ, मुँह बन्द करके मेरे साथ सीधे-साधे लड़केकी तरह शतरंज खेलने बैठ जाओ।

यह प्रस्ताव सुनकर मैं इतस्ततः कर रहा हूँ यह देखकर वह बोली, मैं तुम्हें पथमेंसे झपटकर लाई हूँ सो तुम्हारे उपकारके लिए नहीं आई हूँ। इसमें मेरा स्वार्थ है। शतरंज खेलनेका मुझे शौक है। और शतरंज जब तुम्हारे देशका ही खेल है तब तो तुम जरूर ही इसे अच्छी तरह जानते होगे, यही सोचकर तुम्हें गिरफ्तार करके लानेका लोभ संवरण नहीं कर सकी।

मैंने जवाबमें कहा कि—इसके बाद ही संभवतः कोई मुझे खींचकर ले जायेगा और कहेगा कि मुझे भानुमतीका जादू दिखाओ, तुम जब भारतवर्षके रहनेवाले हो, तो अवश्य जादू जानते होगे।

इसके जवाबमें वह तनिक हँसकर बोली, तुम ऐसी लोभनीय वस्तु नहीं हो कि तुम्हें हस्तगत करनेके लिए होटल भरकी सभी स्त्रियाँ उथल पड़ेंगी। कुछ भी हो, मेरे हाथोंसे तुम्हें कोई

छीनकर ले जायगा, इस भयसे डरनेकी तुम्हें जरूरत नहीं। और अगर तुम जादू जानते हो तब तो हमारे लिए ही डरनेकी बात है।

एक बार हिन्दू-दर्शन जानता हूँ यह स्वीकार करनेके कारण विषम विपदामें पड़ गया था। इसलिए इस बार स्पष्ट रूपसे कहा कि मैं शतरंज नहीं जानता।

सिर्फ शतरंज ही क्यों मुझे तो लगता है कि दुनियाके अनेक खेल तुम नहीं जानते। मैंने जब तुम्हें हाथमें लिया है तो मैं तुम्हें वे सब सिखाउँगी और खिलाउँगी।

इसके बाद हम दोनों शतरंज लेकर बैठ गये। मेरी शिक्षयित्री किस मोहरेका क्या नाम है, और किसकी क्या चाल है इन सबके बारेमें लंबा-चौड़ा सिलसिलेवार उपदेश देने लगीं। मैं सब कुछ जानता था फिर भी अनजान होनेका ढोंग किये रहा, क्योंकि उससे बातें करना मुझे बुरा नहीं लग रहा था। इससे पहले मैंने एक भी रमणी ऐसी नहीं देखी थी जो पुरुषके साथ निस्संकोच रूपसे बातचीत कर सके, जिसकी सब बातों और समूचे व्यवहारमें कुछ न कुछ कृत्रिमताका आवरण न हो। साधारणतः स्त्रियाँ—वे चाहे जिस देशकी हों—हमारी पुरुष जातिके सामने अपना मन नहीं खोल सकतीं। मैंने यही एक स्त्री देखी जो पुरुषके सामने सहज रूपसे खुले मनसे बातें कर सकती थी। उसके साथ पर्देकी आड़मेंसे बातें नहीं करनी पड़ती, इसीकी मुझे खुशी थी। इसलिए इस शिक्षा-व्यापारके तनिक लंबा होनेपर मुझे कोई आपत्ति नहीं थी।

सिर नीचा किये अनर्गल बके जाने पर भी मेरी संगिनी बराबर बरामदेकी तरफ देखती जाती थी, यह बात मेरी नज़रसे छिपी नहीं रही। मैंने उसी तरफ मुँह फिराकर देखा कि उसके डिनरका साथी जोरोंके साथ बरामदेमें चहलकदमी कर रहा है और उसके मुँहमें चुरुट जल रही है और आँखोंमें गुस्सा। मेरी संगिनी भी यह बात लक्ष्य कर रही थी, इसमें कोई संदेह नहीं, क्योंकि साफ दिखाई दे रहा था कि वह भद्र पुरुष उसके मनपर एक बोझकी तरह बैठा है। सब मोहरोंकी गतिविधिका परिचय देनेमें उसे आधा घंटा लगा होगा। इसके बाद खेल शुरू हुआ। पाँच मिनट बीतते न बीतते मैं समझ गया कि शतरंज खेलनेकी विद्या हम दोनोंकी बराबर है, एक बाजी खत्म होते होते रात बीत जायगी। प्रत्येक चाल चलनेके पहले अगर पाँच मिनट तक सोचें और इसके बाद चाल लौटा लें, ऐसी स्थितिमें खेल कितना आगे बढ़ सकता है यह तो साफ समझ सकते हो। कुछ भी हो, आधेक घंटेके बाद वही ग्रांडील चेहरेका साहब अचानक कमरेमें आकर हमारे खेलके टेबलके पास खड़ा हुआ और अत्यन्त विरक्तिके स्वरमें मेरे खेलके साथीको संबोधन करके बोला, अच्छा तो अब मैं चलता हूँ।

यह सुनकर वह शतरंजकी बिसातकी तरफ देखते हुए नितांत अन्यमनस्क भावसे बोली, इतनी जल्दी ?

जल्दी ? रातके ग्यारह बज गये हैं।

अच्छा ? तब जाओ, और देरी मत करो। तुम्हें छह मील घोड़ेपर जाना होगा।

कल आ रही हो ?

अवश्य, यह तो कहा ही है। दस बजे तक पहुँच जाऊँगी।

बात पक्की रही ना, भूलोगी तो नहीं ?

मैं बाइबल हाथमें लेकर तुम्हारी बातका जवाब नहीं दे सकती।

गुड नाइट।

गुड नाइट।

साहब चला गया, लेकिन न जाने क्यों फिर लौट आया। तनिक दूर खड़ा रह कर बोला, तुम कबसे शतरंजकी ऐसी भक्त हो गईं ?

उत्तर आया, आजसे।

इसके बाद वह साहब-पुंगव 'हूँ' भर उच्चारण करके कमरे-से दनदनाता हुआ बाहर चला गया।

मेरी संगिनीने उसी समय बिसात उलट दी और खिलखिलाकर हँस पड़ी। ऐसा लगा मानो पियानोके सबसे ऊँचे सप्तकपर न जाने कौन हल्केसे उँगलियाँ चला गया। साथ ही साथ उसका चेहरा आँखें सब उज्ज्वल हो उठीं। उसके भीतरसे मानो एक प्राणोंका फुहारा उछल पड़ा और आकाश और हवामें फैल गया। देखते-देखते बत्तियोंका प्रकाश भी हँस पड़ा। फूल्दानीके कटे हुए फूल भी सब ताजे हो गये। इसके साथ ही मेरे मनकी वीणा-का तार भी एक सुर चढ़ गया।

तुम्हारे साथ शतरंज खेलनेका अर्थ समझमें आया ?

नहीं।

इस व्यक्तिके हाथसे छुट्टी पानेके लिए। वरना मैं और शतरंज खेलने बैठूँ ? इसके जैसा मूर्खोंका खेल दुनियामें दूसरा

नहीं है। जार्ज जैसे व्यक्तिके साथ सुबह शाम रहनेपर शरीर मन एकदम निढाल हो जाता है। उसकी बातें सुनना और अफीम खाना दोनों एक ही बात है।

क्यों ?

उसका सब विषयोंके बारेमें मत है फिर भी किसी विषयमें मन नहीं है। उस जातिके लोगोंमें सार होता है लेकिन रस नहीं होता। वे स्त्रियोंके स्वामी होनेके लिए जितने उपयुक्त हैं, संगी होनेके लिए उतने ही अनुपयुक्त हैं।

बात अच्छी तरह समझमें नहीं आई। स्वामी ही तो स्त्रीका चिरकालका संगी होता है ?

चिरकालका होने पर भी एक दिनका भी नहीं होता, ऐसा हो सकता है, और होता भी है।

तब किस गुणसे वे स्वामीके रूपमें सर्वश्रेष्ठ होते हैं ?

उनके शरीर और चरित्र दोनोंके भीतर इतना जोर होता है कि वे जीवनका भार सहजमें वहन कर सकते हैं। उनकी प्रकृति तुमसे ठीक उल्टी है। वे सोचते नहीं, काम करते हैं। मुद्देकी बात यह कि वे होते हैं समाजके स्तम्भ, तुम्हारी तरह कमरा सजानेके चित्र या गुड्डे नहीं।

हो सकता है, एक जातिके लोगोंका बहिरंग पत्थरका और अंतरंग सीसेका बना होता है और वे ही असली आदमी होते हैं; लेकिन तुमने घड़ी भरके परिचयमें ही मेरा स्वभाव पहचान लिया ?

अवश्य। मेरी आँखोंकी तरफ एक बार अच्छी तरह देखो तो सही, तब देखोगे कि उनके भीतर एक ऐसा प्रकाश है जिससे मनुष्यका अंतर तक देखा जा सकता है।

मैंने निरीक्षण करके देखा कि वे दोनों आँखें लहसुनियाकी बनी हुई हैं। लहसुनिया क्या होता है जानते हो? एक रत्न है—अंग्रेजीमें जिसे cats eye कहते हैं। उसपर प्रकाशकी रेखा पड़ती है और हर क्षण उसका रंग बदलता रहता है।—कुछ देर बाद ही मैंने अपनी आँखें हटा लीं। डर लगने लगा, कहीं वह प्रकाश सचमुचमें मेरी आँखोंके भीतरसे अंतरमें प्रवेश न कर जाय।

अब विश्वास हुआ कि मेरी दृष्टि मर्मभेदी है?

विश्वास करूँ चाहे न करूँ लेकिन स्वीकार करनेमें आपत्ति नहीं है।

जानना चाहते हो कि तुम्हारे और जार्जके बीच असली अन्तर क्या है?

दूसरेके दिलके आईनेमें अपने दिलकी तसवीर कैसी दीखती है यह तो मुझे लगता है मनुष्य-मात्र ही जानना चाहते हैं।

एक उपमा द्वारा तुम्हें समझा देती हूँ। जार्ज है शतरंजका फीला और तुम रुख। वह एक रुख पर सीधा चलना चाहता है और तुम तिरछा।

इन दोनोंमेंसे तुम्हारे हाथमें कौन अच्छा खेलता है?

हमारे लिए ये दोनों ही बराबर हैं। कंधोंपर अपना भार देनेके बाद दोनोंकी ही चाल बदल जाती है। दोनोंको ही टेढ़े तिरछे ढाई पाँव चलनेके लिए बाध्य होना पड़ता है।

पुरुषोंको इस प्रकार परेशान करनेसे तुम लोगोंको क्या सुख मिलता है?

यह सुनकर वह अचानक खिन्न होकर बोली, तुम तो मेरे फादर कन्फेसर नहीं हो, जो दिल खोलकर तुम्हारे सामने अपने

सुख-दुखकी सब बातें कहनी पड़ेंगी। तुम अगर मुझसे इस प्रकार सवाल जवाब करोगे तो मैं इसी समय उठकर चली जाऊँगी।

यह कहकर वह चेयरसे उठकर खड़ी हो गई। मुझे ऐसी रूढ़ बात सुननेकी आदत नहीं थी इसीलिए मैंने अति गंभीर भावसे जवाब दिया कि तुम अगर चली जाना चाहती हो तो मैं तुमसे रुकनेके लिए अनुरोध नहीं करूँगा। यह मत भूल जाना कि मैंने तुम्हें नहीं रोक रखा है।

यह सुनकर मिनट भर चुप रहनेके बाद उसने अत्यंत विनीत और नम्र भावसे पूछा, मुझपर गुस्सा हो गये ?

मैंने तनिक लज्जित भावसे जवाब दिया, नहीं। गुस्सा होनेका तो कोई कारण नहीं है।

तब फिर इतने गंभीर क्यों हो गये ?

इतनी देर इस बन्द कमरेमें गैसकी बत्तीके नीचे बैठे-बैठे मेरा सिर दर्द करने लगा है—इसीलिए यह झूठ बात मेरे मुँहसे अनायास निकल पड़ी। इसके जवाबमें—देखूँ, तुम्हें बुखार तो नहीं है ? —इतना कहकर उसने मेरे सिरपर हाथ रक्खा। उस स्पर्शमें उसकी उँगलियोंके सिरोंपर एक तरहका ससंकोच आदरका इशारा था। मिनट भरके बाद वह अपना हाथ हटाकर बोली, तुम्हारा सिर जरा गरम हो गया है, लेकिन यह बुखार नहीं है। चलो, बाहर चलकर बैठें तो अच्छा हो जायगा।

मैंने बिना कुछ कहे उसका अनुसरण किया। तुम लोग अगर कहो कि उसने मुझे मेसमराइज कर लिया था, तो मैं इसका प्रतिवाद नहीं करूँगा।

बाहर आकर देखा कि यहाँ आदम जातका नाम भी नहीं है। यद्यपि उस समय रातके साढ़े ग्यारह ही बजे थे फिर भी सब सोने चले गये थे। समझ गया कि इलफ्रेकोम्ब सचमुच ही नींदका देश है। हम दोनों दो बेंतकी कुर्सियोंपर बैठकर बाहरका दृश्य देखने लगे। देखा कि आसमान और समुद्र दोनों एक हो गये हैं, दोनोंका रंग स्लेटिया है। और आसमानमें जिस प्रकार तारे चमक रहे हैं उसी प्रकार समुद्रपर जहाँ-जहाँ प्रकाश पड़ता है वहाँ-वहाँ तारे चमक जाते हैं, यहाँ-वहाँ पानी रुपयोंकी तरह चमचमा रहा है और पारेकी तरह झिलमिल कर रहा है। पेड़-पौधे साफ दिखाई नहीं देते, ऐसा लगता है मानो जगह-जगह अंधकार इकट्ठा हो गया है। उस समय ससागरा वसुन्धराने मौनव्रत ले लिया था। इस निस्तब्ध निशीथकी निविड़ शांतिने मेरी संगिनीके हृदय-मनको स्पर्श किया था। क्योंकि वह बड़ी देर तक ध्यानमग्न बैठी रही। मैं भी चुप बैठा रहा। इसके बाद उसने आँखें बन्द करके अति मृदु स्वरमें पूछा, तुम्हारे देशमें योगी नामके एक तरहके लोग होते हैं जो कामिनी-काञ्चन नहीं छूते, और संसार त्याग करके वनमें चले जाते हैं।

वनमें जाते हैं, यह बात सच है।

और वहाँ आहार-निद्रा त्याग करके रात-दिन जप-तप करते हैं?

सुनते तो यही हैं।

और उसके फलस्वरूप जितनी उनकी देहका क्षय होता है उतनी ही उनके मनकी शक्ति बढ़ती है, जितना उनका बहिरंग

स्थिर और शांत होने लगता है उतना ही उनके अंतरंगका तेज फूट उठता है ?

ऐसा हो सकता है ।

हो सकता है क्यों कहते हो ? सुना है कि तुम लोग विश्वास करते हो कि इन लोगोंके देह-मनमें ऐसी अलौकिक शक्ति पैदा होती है कि इन सब मुक्त जीवोंके स्पर्शसे और बातोंसे मनुष्यके शरीर और मनके सब रोग दूर हो जाते हैं ।

ये सब औरतोंके विश्वासकी बातें हैं ।

तुम्हारी क्यों नहीं हैं ?

मैं जो जानता नहीं उसपर विश्वास नहीं करता । मैं इसका झूठ-सच कैसे जानूँगा ? मैंने तो कभी योगका अभ्यास नहीं किया।

मैंने तो समझा था कि तुमने किया है ?

यह अद्भुत धारणा तुम्हारी किस बातपरसे हुई ?

उन्हीं जितेन्द्रिय पुरुषोंकी तरह तुम्हारे चेहरेपर एक शीर्ण और आँखोंमें एक तीक्ष्ण भाव है ।

उसका कारण है अनिद्रा ।

और अनाहार । तुम्हारी आँखोंमें मनकी अनिद्रा और हृदयका उपवास इन दोनोंके लक्षण हैं । तुम्हारे चेहरेका यह राख-दबे अंगारे-सा रूप पहले पहल मेरी नज़रमें आया । कोई अद्भुत चीज देखनेपर मनुष्यकी आँखें सहज ही उस तरफ़ जाती हैं, उसके बारेमें विशेष रूपसे जाननेके लिए मन लालायित हो उठता है । जार्जके हाथसे छुटकारा पानेके लिए मैंने तुम्हारा सहारा लिया, यह बात बिल्कुल मिथ्या है । तुम्हें एक बार हिला-डुलाकर अच्छी तरह देखनेके लिए ही मैं तुम्हारे पास आई ।

मेरा तपोभंग करनेके लिए ?

तुम जिस दिन सेंट एंटोनी हो उठोगे, मैं भी उस दिन स्वर्ग-की अप्सरा बनकर आ खड़ी होऊँगी। इस बीच तुम्हारे इस गेरुआ रंगके मीना किये हुए चेहरेके पीछे कौन-सी धातु है यही जाननेका मुझे कौतूहल हुआ था।

किस धातुका आविष्कार किया, क्या जान सकता हूँ ?

मैं जानती हूँ तुम क्या सुनना चाहते हो।

तब तो तुम मेरे मनकी वह बात जानती हो, जो मैं नहीं जानता।

अवश्य ! तुम चाहते हो कि मैं कहूँ— चुम्बक।

सुनते ही मुझे ज्ञान हुआ कि यह जवाब सुनकर मैं जरूर खुशी होता अगर उस पर विश्वास कर सकता। यह नई आकांक्षा उसने मनमें आविष्कार की है या निर्माण की है, यह बात मैं आज भी नहीं जानता। मैं मन ही मन जवाब खोज रहा हूँ कि अचानक उसने पूछा कि कितने बजे हैं।

मैंने घड़ी देखकर कहा—बारह।

बारह बजे सुनकर वह उछलकर खड़ी हो गई, बोली, ओह ! इतनी रात हो गई है ?

तुम मनुष्यको इतना बका भी सकते हो। जाऊँ, सोने जाऊँ। कल सुबह जल्दी उठना है। बड़ी दूर जाना है, और फिर दस बजेके भीतर पहुँचना है।

कहाँ जाना होगा ?

एक शिकारके लिए। क्यों, तुम क्या नहीं जानते ? तुम्हारे सामने ही जार्जके साथ बात हुई है।

तब तो वह बात तुम रखोगी ?

तुमने यह कैसे सोचा कि नहीं रखूँगी ?

तुमने जिस तरह उसका जवाब दिया उससे ।

वह सिर्फ जार्जको सजा देनेके लिए । आज रात उसे नींद नहीं आवेगी । और यह तो जानते ही हो कि उसके लिए जागते रहना कितना कष्टकर है ।

ऐसा लगता है कि तुम्हारा बंधु-बांधवोंपर अनुग्रह बहुत ज्यादा है ।

जरूर । जार्ज सरीखे पुरुषके मनको बीच-बीचमें जरा उकसाय न जाय तो वह सहज ही बुझ जाता है । और इसके अलाव उसके मनमें खोंचा मारनेमें ज्यादा निष्ठुरता भी नहीं है । उनके मनको कोई ज्यादा कष्ट नहीं दे सकता, वे भी एक प्रकारसे ज्याद स्त्रियोंको और कोई कष्ट नहीं दे सकते । इसीलिए तो वे आदर्श पति होते हैं । दिलको लेकर खींच-तान छीना-झपटी तुम्हारे सरीख लोग ही करते हैं ।

तुम्हारी बात मुझे पहेली-सी लग रही है ।

अगर पहेली हो तो पहेली ही सही । तुम्हारे लिए मैं उसव और व्याख्या नहीं कर सकती । मुझे जैसी थकान महसूस हो रह है वैसी ही नींद आ रही है । तुम्हारा कमरा ऊपर है ?

हाँ ।

तब उठो, ऊपर चला जाय ।

हम दोनों इसके बाद कमरेमें लौट आये ।

कॉरीडोरमें पहुँचते ही वह बोली, अच्छी बात है, तुम्हार एक कार्ड मुझे दो ।

मैंने कार्ड दे दिया। वह मेरा नाम पढ़कर बोली, मैं तुम्हें सु' कहकर संबोधन करूँगी।

मैंने पूछा, तुम्हें क्या कहकर संबोधन करूँ ?

जवाबमें कहा—जो चाहो सो कुछ बना लो ना।

अच्छी बात है, आज तुम्हारा जिस विपदसे उद्धार किया है उसको देखते हुए तुम्हारे लिए मुझे 'सेवियर' कहकर संबोधन करना ठीक है।

तथास्तु।

हमारे देशमें विपत्तका जो उद्धार करते है वे देव नहीं देवी हैं, उनका नाम है तारिणी।

वाह क्या खूब नाम है। उसका ता-अलग करके मुझे रिणी कहकर संबोधन किया करो।

इस प्रकार बातें करते-करते हम लोग सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। एक गैसकी बत्तीके पास पहुँचते ही वह अचानक ठिठककर खड़ी हो गई और मेरे हाथकी तरफ देखकर बोली, तुम्हारे हाथमें क्या हो गया है ?

उसी समय अपने हाथकी तरफ मेरी नज़र पड़ी। देखता क्या हूँ हाथ लाल सुर्ख हो रहा है, मानो किसीने उसपर सिन्दूर पोत दिया है। उसने मेरा दाहिना हाथ अपने बाएँ हाथपर रखकर पूछा—किसके सीनेके रक्तमें हाथ डुबोये हैं—जरूर वेनस द' मिलो होगी ?

नहीं, अपने।

इतनी देर बाद एक सच बात कही है। आशा करती हूँ यह रंग पक्का है। क्योंकि जिस दिन रंग छूट जायगा उसी दिन

जान लेना कि तुम्हारे साथ मेरा अनुराग भी खत्म हो गया है। जाओ, अब जाकर सो जाओ। अच्छी तरह सोना और मेरे सपने देखना।

इतना कहकर वह दो छलांगमें अन्तर्धान हो गई।

मैं सोनेके कमरेमें गया और आईनेमें अपना चेहरा देखकर चौंक पड़ा। एक बोतल शैंपेन पीनेके बाद जैसा चेहरा होता है मेरा वैसा ही हो गया था। क्या देखता हूँ कि दोनों गालोंपर रक्तकी लाली छलक आई है, और आँखोंके दोनों तारे चमचमा रहे हैं—बाकी अंश छलछल कर रहा है। उस समय अपना चेहरा मुझे बड़ा सुन्दर लग रहा था। हाँ, उस रात मैंने उसे स्वप्नमें नहीं देखा, क्योंकि उस रात मुझे नींद ही नहीं आई।

२

उस रात हम दोनोंने जिस जीवन-नाटकका अभिनय शुरू किया था, साल भर बाद एक दूसरी रातको उसका अन्त हुआ। मैं पहले दिनकी सारी घटना तुम्हें बता दी है, अब आखिरी दिनकी कहूँगा—क्योंकि इन दोनों दिनोंकी सारी बातें मेरे दिलमें आज भी गुँथी हुई हैं। इसके अलावा, इस बीच जो कुछ हुआ था वह सब मेरे दिलमें है, बाहर नहीं। जिस व्यापारमें बाह्य घटनाकी विचित्रता नहीं है उसकी कहानी कही नहीं जा सकती। अपने दिलकी उस सालकी डाक्टरी डायरी जब मैं खुद पढ़नेसे डरता हूँ तब तुम्हें पढ़कर सुनानेकी मेरी रत्ती भर भी इच्छा नहीं है। इतना कह देना ही काफी होगा कि मेरे दिलके अदृश्य तारोंको रिणी इस प्रकार अपनी दस उँगलियोंसे जकड़कर कठपुतलीकी तरह

नचाया था। मेरे अंतरमें उसने जो प्रवृत्ति जगा दी थी उसे प्रेम कहते हैं या नहीं, यह नहीं जानता, सिर्फ इतना जानता हूँ कि उस मनोभावमें अहंकार था, अभिमान था, क्रोध था, जिद् थी, और इसीके साथ था करुण, मधुर, दास्य और सख्य यह चार तरहका हृदय-रस। इसमें जिसका लेशमात्र भी नहीं था वह है देहका नाम या गन्ध। मेरे दिलके इन्हीं कड़े और कोमल पर्दोंपर वह अपनी उँगलियाँ चलाकर जब जैसी इच्छा होती तब वैसा ही सुर निकाल सकती थी। उसकी उँगलियोंकी दाबसे वह सुर कभी तो अत्यन्त कोमल और कभी अत्यन्त तीव्र हो उठता था।

किसी फ्रेंच कविने कहा है कि रमणी हमारे देहकी छाया होती है। उसे पकड़ने जाओ, वह भाग जायेगी, और उसके पाससे भागनेकी कोशिश करो तो वह तुम्हारे पीछे भागी आवेगी। मैंने बारह महीने इस छायाके साथ रात-दिन आँख-मिचौनी खेली थी। इस खेलमें कोई मजा नहीं था। फिर भी यह खेल समाप्त करनेकी भी मुझमें शक्ति नहीं थी। अनिद्रा रोगसे पीड़ित व्यक्ति जिस प्रकार जितना ज्यादा सोनेकी चेष्टा करता है उतना ही ज्यादा जागता रहता है। मैं भी उसी प्रकार अपने आपको इस खेलसे छुड़ानेकी जितनी चेष्टा करता उतना ही ज्यादा इसमें फँस जाता। सच कहूँ तो यह खेल बन्द करनेका मेरा आग्रह ही नहीं था, क्योंकि मेरे दिलकी इस नवीन अशान्तिमें नवजीवनका तीव्र स्वाद था।

मैं सैकड़ों कोशिशें करनेके बाद भी रिणीके दिलको अपने हस्तगत नहीं कर सका, उसके लिए मैं लज्जित नहीं हूँ, क्योंकि हवा और आकाशको कोई मुट्ठीमें बन्द नहीं कर सकता। उसके

दिलका स्वभाव बहुत कुछ इस आकाशके समान ही था और दिन प्रतिदिन उसका चेहरा बदलता रहता था। आज देखो तो आँधी पानी ओला बिजली है, कल देखो तो फिर चाँदकी चाँदनी है, वसंतकी हवा है। एक दिन गोधूलि और दूसरे दिन कड़ी धूप। इसके अलावा वह एक साथ शिशु, बालिका, युवती और वृद्धा थी। जब उसमें स्फूर्ति होती उसका आमोद बढ़ता, तब वह छोटे बच्चों-की सी हरकत करती, मेरी नाक पकड़कर खींचती, बाल पकड़कर तानती, मुँह फाड़ती, जीभ बाहर करके दिखाती। और कभी घंटों अपने आप अपने बचपनकी कहानी कहती रहती। उसे कब किसने डाँटा था, कब किसने प्यार किया था, उसने कब क्या पढ़ा, उसे कब क्या इनाम मिला, कब वन-भोजके लिए गई, कब घोड़े परसे गिर पड़ी—इस प्रकार इन सब बातोंकी जब छोटी-से छोटी बातें वह बताती तब एक बालिकाके मनका चित्र अपने सामने स्पष्ट देख पाता। उस चित्रकी रेखाएँ जिस प्रकार सरल-सीधी थीं, उसका रंग भी उसी प्रकार उज्ज्वल था। इसके अलावा वह एक कट्टर रोमन केथोलिक थी। एक आबनूसके क्रासपर जड़ा चाँदीका क्राइस्ट उसके वक्षपर आठों पहर झूलता रहता था, क्षण भरके लिए भी वह उसे स्थानान्तरित नहीं करती थी। वह जब अपने धर्मके बारेमें वक्तृता देने लगती तब ऐसा लगता मानो उसकी उम्र अस्सी सालकी है। उस समय उसके इस सरल सीधे धार्मिक विश्वासके सामने मेरी दार्शनिक बुद्धि सिर झुकाये रहती। लेकिन असलमें वह थी पूर्ण युवती—अगर यौवनका अर्थ प्राणोंका उद्दाम उच्छ्वास हो। उसके सभी मनोभाव, सब व्यवहार और सब बातोंमें प्राणोंका एक ऐसा ज्वार बहता रहता था जिसके वेगसे

मेरी अंतरात्मा लगातार उठा पटक करती थी। हम लोग महीनेमें दस बार झगड़ते थे और ईश्वरको साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करते थे कि जीवनमें और कभी एक दूसरेका मुँह नहीं देखेंगे। लेकिन दो दिन बीतते न बीतते या तो मैं उसके पास भागा जाता, नहीं तो वह मेरे पास भागी आती। तब हम पिछली बातें सब भूल जाते और वह पुनर्मिलन फिरसे हमारा प्रथम मिलन हो जाता। इसी प्रकार दिन-पर-दिन और महीने-पर-महीने बीत गये थे। हमारा अन्तिम झगड़ा बहुत दिनोंके लिए स्थायी हो गया था। मैं बताना भूल गया कि उसने मेरे मनकी सर्वप्रधान दुर्बलता आविष्कार की थी—उसका नाम है जेलेसी। मनकी जिस आगसे मनुष्य जल मरता है, रिणी उसी आगको जलाने-का मंत्र जानती थी। मैं दुनियामें बहुत से लोगोंकी अवज्ञा करता रहा हूँ, लेकिन इससे पहले मैंने किसीसे कभी डाह नहीं की। साम सौरसे जार्ज सरीखे व्यक्तिके साथ डाह करनेसे बढ़कर मेरे जैसे व्यक्तिके लिए और क्या बड़ी हीनता हो सकती है? कारण, मेरा जो कुछ था, वह था रुपयोंका जोर और शरीरका जोर। लेकिन रिणीने मुझे यह हीनता भी स्वीकार करनेपर बाध्य किया था। उसका अन्तिम व्यवहार मेरे लिए जितना निष्ठुर उतना ही अपमानजनक भी लगा था। अपने मनकी दुर्बलताका स्पष्ट परिचय पानेके समान कष्टकर चीज मनुष्यके लिए और कुछ नहीं हो सकती।

भय जिस प्रकार मनुष्यको दुःसाहसिक कर देता है, मेरी इस दुर्बलताने ही मेरे मनको इतना सख्त कर दिया था कि मैंने फिर कभी उसका मुँह नहीं देखा होता, यदि वह मुझे चिट्ठी नहीं

लिखती। उस चिट्ठीका प्रत्येक अक्षर मेरे मनमें है, वह चिट्ठी यह है।—

तुम्हारे साथ जब आखिरी मुलाकात हुई थी तब मैंने देखा कि तुम्हारा शरीर टूट रहा है। मुझे लगता है कि तुम्हारे लिए एक चेंज बहुत जरूरी है। मैं जहाँ हूँ वहाँकी हवा मरे हुए आदमी-को भी जिला देती है। यह एक बहुत ही छोटा गँवई गाँव है। यहाँ तुम्हारे लिए रहने जैसी कोई जगह नहीं है। लेकिन इसके ठीक आगेके स्टेशनपर कई अच्छी-अच्छी होटलें हैं। मेरी इच्छा है कि तुम कल ही लंदन छोड़कर वहाँ जाओ। इस समय एप्रिल महीनेका मध्य है, और देरी करनेपर ऐसा अच्छा मौका नहीं मिलेगा। अगर हाथमें रुपये न हों तो मुझे टेलीग्राम देना; मैं भेज दूँगी। बादमें ब्याज समेत लौटा देना।

मैंने चिट्ठीका कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन दूसरे दिन सुबहकी ट्रेनसे ही लंदन छोड़ दिया। मैं किसी सबबसे तुम लोगोंके सामने उस जगहका नाम व्यक्त नहीं करूँगा। इतना ही बता देता हूँ कि. रिणी जहाँ थी उसके नामका पहला अक्षर B और उसके आगेके स्टेशनके नामका पहला अक्षर W है।

ट्रेन जब B स्टेशनपर पहुँची, उस समय दो बजे थे। मैंने जंगलेसे मुँह निकाल कर देखा, रिणी प्लेटफार्मपर नहीं है। इसके बाद इधर-उधर नज़र उठाकर देखा कि प्लेटफार्मकी रेलिंगके ऊपर रास्तेके किनारे एक पेड़के सहारे वह खड़ी है। पहले मैं उसे क्यों नहीं देख पाया यह सोचकर मुझे अचरज हुआ, क्योंकि वह जिस रंगके कपड़े पहने थी वे आध कोस

दूसरे भी लोगोंकी आँखोंमें पड़ते थे—एक गहरे काले रंगके गाउन पर उसने लेमन कलरका जाकिट पहन रखा था। उन दिन रिणी एक अप्रत्याशित नई मूर्तिके रूपमें, हमारे देशकी नववधूके रूपमें दिखाई दी। इस वज्र विद्युत्से गढ़ी हुई रमणीके मुँहपर पहले कभी मैंने लज्जाका चिह्न मात्र नहीं देखा था। लेकिन उस दिन उसके चेहरेपर जो ईषत् हँसी खिली थी वह लज्जाकी रक्तिम हँसी थी। वह आँख उठाकर मेरी तरफ अच्छी तरह देख नहीं पा रही थी। उसका मुखड़ा इतना सुन्दर लग रहा था कि मैं नजर भरकर और जी भरकर वही देखने लगा। अगर मैंने कभी उसे प्रेम किया था तो उसी दिन और उसी क्षण। मनुष्यका समस्त हृदय एक मुहूर्त भरमें ऐसा रंग ले सकता है इस सत्यका परिचय मुझे उसी दिन पहली बार मिला।

ट्रेन B स्टेशन पर मिनट भरसे ज्यादा नहीं ठहरी होगी, लेकिन वही एक मिनट मेरे लिए अनन्तकाल हो गया। इसके पाँच मिनट बाद ट्रेन W स्टेशनपर पहुँची। मैं समुद्रके किनारे एक बड़ी होटलमें जा उतरा। न जाने क्यों, होटलमें पहुँचते ही मुझे अगाध श्रान्ति महसूस होने लगी। मैं कपड़े उतारकर बिस्तर-पर पड़कर सो गया। यही एक दिन था जिस दिन मैं विलायतमें दिनमें सोया और ऐसी नींद मुझे जीवनमें कभी नहीं आई। जागा तो पाँच बज गये थे। झटपट कपड़े बदलकर नीचे आकर चाय पी और पैदल ही स्टेशनकी तरफ चल दिया। जब उस गाँवके करीब पहुँचा तब सात बजे होंगे, पर उस समय भी आसमानमें काफी प्रकाश था। विलायतमें जानते ही हो कि गरमियोंकी रातें दिनका अन्तिम प्रकाश खींच लाती हैं; सूर्यके अस्त हो जानेपर

भी उसका अस्तमित प्रकाश घंटों रात्रिकी देहसे लगा रहता है। रिणी किस मुहल्लेमें किस मकानमें रहती है यह मैं नहीं जानता था। लेकिन जानता था कि W से B तक जानेके रास्तेमें कहीं न कहीं उससे मुलाकात होगी।

B की सीमामें पैर रखते ही क्या देखता हूँ कि एक स्त्री कुछ घबराई-सी रास्ते पर चहल कदमी कर रही है। दूरसे उसे पहचान नहीं सका क्योंकि इस बीचमें रिणीने अपनी पोशाक बदल डाली थी। उसकी पोशाकके रंगका नाम नहीं जानता, इतना ही कह सकता हूँ कि इस साँझके प्रकाशके साथ वह एकमेक हो गया था–वह रंग मानो गोधूलिके रंगमें रंगा हुआ था।

मुझे देखते ही रिणी मेरी तरफ पीठ करके भाग खड़ी हुई। मैं धीरे-धीरे उसी तरफ बढ़ने लगा। मैं जानता था कि वह इन पेड़-पौधोंमें कहीं न कहीं जरूर छिपी है, सहजमें हाथ नहीं आयेगी, थोड़ी बहुत ढूँढ़-ढाँढ़ करके उसे बाहर निकालना होगा। हाँ, यह जरूर है कि मुझे उसके इस व्यवहारसे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि इतने दिनोंमें मैं सीख गया था कि रिणी कब क्या व्यवहार करेगी, यह एक दूसरेके लिए जानना तो दूर, वह खुद भी नहीं जानती। मैंने कुछ आगे बढ़कर देखा कि दाहिनी तरफ वनमें एक पगडंडीके किनारे एक ओक वृक्षकी आड़में रिणी इस तरह खड़ी है कि पत्तोंकी सन्धियोंमेंसे झरता हुआ प्रकाश उसके मुँहपर पड़ता रहे। मैं बहुत ही सावधानीसे उसकी तरफ बढ़ने लगा, वह चित्रपुत्तलिकाकी तरह खड़ी ही रही। उसके चेहरेका अर्धांश छायासे ढक जानेके कारण बाकी अंश स्वर्णमुद्रापर अंकित ग्रीक-

रमणी-मूर्तिकी तरह दिखाई दे रहा था—मूर्ति, जैसी सुन्दर वैसी ही कठोर। मेरे पास पहुँचते ही, उसने दोनो हाथोंसे अपना मुख ढक लिया। मैं उसके सामने जाकर खड़ा हो गया। दोनों-मेंसे कोई कुछ नहीं बोला।

कितनी देर इसी तरह बीत गई, नहीं जानता। इसके बाद पहले पहल बात रिणी ही ने की क्योंकि वह ज्यादा देर चुप नहीं रह सकती थी, और खास तौरसे मेरे निकट। उसकी बातके सुरमें झगड़ेका पूर्वाभास था। पहला संभाषण यही हुआ—तुम यहाँसे चले जाओ। मैं तुमसे बात करना नहीं चाहती, तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहती।

मेरा कसूर ?

तुम यहाँ क्यों आये ?

तुमने आनेके लिए लिखा था इसलिए।

उस दिन मेरा मन बड़ा उदास था। बहुत ही एकाकी-सा लग रहा था इसलिए वह चिट्ठी लिखी। लेकिन यह कभी नहीं सोचा था कि तुम चिट्ठी पाते ही यहाँ भागे चले आओगे। तुम जानते हो, माको अगर इसका पता चल गया कि मैं एक काले आदमीसे यारी कर रही हूँ तो मुझे घर छोड़ना पड़ेगा।

यारी शब्द मेरे कानोंमें खटका और मैंने तनिक विरक्त होकर कहा—तुम्हारे मुँहसे ही यह सुन रहा हूँ। इसका झूठ सच भगवान् जाने। लेकिन तुम क्या यह कहना चाहती हो कि तुम्हें इसका जरा भी गुमान नहीं था कि आऊँगा ?

स्वप्नमें भी नहीं।

तब ट्रेन आनेके समय किसकी खोजमें स्टेशनपर गई थीं ?

किसी की खोजमें नहीं, सिर्फ चिट्ठी डाकमें डालने।

तब वैसी पोशाक क्यों पहनी थी जो आध कोस दूरसे फूटी आँखोंसे भी दिखाई दे ?

तुम्हारी सुनज़रमें पड़नेके लिए ?

सु हो चाहे कु हो, मेरी नज़रोंमें ही पड़नेके लिए।

तुम्हें विश्वास है कि तुम्हें देखे बिना मैं रह नहीं सकती ?

यह कैसे बताऊँ ? यह देखो इतनी देरसे हाथोंसे आँखें बंद कर रखी हैं।

इन आँखोंको प्रकाश सहन नहीं होता इसीलिए। मेरी आँखों-में पीड़ा है।

देखूँ क्या हुआ है।—इतना कहकर मैंने अपने हाथसे उसके मुँहपरसे हाथ हटानेकी चेष्टा की।

रिणी बोली, तुम हाथ हटा लो, वर्ना मैं आँखें नहीं खोलूँगी। और तुम जानते हो कि जोरमें मुझसे पार नहीं पा सकोगे।

मैं जानता हूँ कि मैं जार्ज नहीं हूँ। शरीरके जोरसे मैं किसीकी आँखें नहीं खुलवा सकूँगा।

यह सुनते ही रिणीने मुँहपरसे हाथ हटा लिया और बड़े ही उत्तेजित भावसे कहा—मेरी आँखें खुलवानेके लिए किसीको परेशान होनेकी जरूरत नहीं। मैं तो तुम्हारी तरह अंधी नहीं हूँ। तुममें किसीके भीतर देखनेकी शक्ति होती तो तुम जब तब मुझे इतना अस्थिर नहीं करते। जानते हो, मैं क्यों गुस्सा हुई थी ? तुम्हारी यह पोशाक देखकर। तुम्हें आज इस पोशाकमें नहीं देखूँगी इसीलिए मैंने आँखें बन्द कर ली थीं।

क्यों, इस पोशाकमें क्या बुराई है ? यह तो मेरी सबसे सुन्दर पोशाक है।

बुराई यही है कि यह वह पोशाक नहीं है जिस पोशाकमें मैंने तुम्हें पहले पहल देखा था।

यह जानते ही मुझे याद आ गया कि रिणी वही पोशाक पहने हुए है जिस पोशाकमें मैंने उसे पहले पहल इल्फेकोम्बमें देखा था। मैंने ईषत् अप्रतिम भावसे कहा, यह बात मेरे ख्याल-में भी नहीं आई कि हम पुरुष लोग, क्या पहनते हैं और क्या नहीं पहनते, इससे तुम्हारा कुछ आता जाता है ?

नहीं, हम लोग तो मनुष्य ही नहीं हैं, हमारी तो आँखें ही नहीं हैं। हो सकता है तुम्हारा यह भी विश्वास हो कि तुम सुन्दर हो, कुत्सित हो, इससे भी हमारा कुछ आता जाता नहीं।

मेरा तो यही विश्वास है।

फिर किस आकर्षणसे तुम मुझे खींचे लिये फिरते हो ?

रूपके।

जरूर ! संभव है तुम यह सोचते होगे कि तुम्हारी बातें सुन कर मैं मोहित हो गई हूँ। मानती हूँ कि तुम्हारी बातें मुझे बहुत अच्छी लगती है—इतना ही नहीं उनका नशा भी है। लेकिन तुम्हारा कंठस्वर सुननेसे पहले जिस बुरे क्षणमें मैंने तुम्हें देखा, मुझे उसी समय मालूम पड़ गया कि मेरे जीवनमें एक नई ज्वाला-की सृष्टि हुई है। मैं चाहूँ या न चाहूँ, तुम्हारे जीवनके साथ मेरे जीवनका चिर संघर्ष रहेगा ही।

ये सब बातें इससे पहले तो तुमने बताईं नहीं।

यह कानोंसे सुननेकी बात नहीं है, आँखोंसे देखनेकी चीज

है। क्या मैं शौकसे तुम्हें अंधा कहती हूँ ? अब तो सुन लिया, आओ चलकर समुद्रके किनारे बैठें। आज तुमसे मुझे कई बातें कहनी हैं।

जिस रास्तेसे चले वह रास्ता जिस प्रकार सीधा था, दो तरफके बड़े बड़े पेड़ोंकी छायासे उसी प्रकार अंधकारमय था। मैं कदम कदम पर ठोकरें खाने लगा। रिणी बोली, मैं रास्ता पहचानती हूँ, तुम मेरा हाथ पकड़ लो, मैं तुम्हें बेखटके समुद्रके किनारे पहुँचा दूँगी। मैं उसका हाथ पकड़कर चुपचाप उस अँधेरे रास्तेसे आगे बढ़ने लगा। मैं अनुमानसे समझ गया कि इस निर्जन अंधकारका प्रभाव उसके मनको शांत और वशीभूत करता जा रहा है। कुछ देर बाद प्रमाण मिला कि मेरा अनुमान ठीक है।

दसेक मिनटके बाद रिणी बोली, सु, तुम जानते हो कि तुम्हारा हाथ तुम्हारे मुँहसे बहुत ज्यादा सत्यवादी है ?

मतलब ?

मतलब यह कि मुँहमें जो दबाये रखते हो, वह तुम्हारे हाथसे पकड़ाई दे जाता है।

वह क्या चीज है ?

तुम्हारा हृदय।

और ?

और, तुम्हारे रक्तमें जो बिजली है, वह तुम्हारी उँगलियोंके सिरोंसे बाहर छिटक पड़ती है। उसके स्पर्शसे सारे शरीरमें जो बिजली दौड़ जाती है, वह शिराओंके भीतर जाकर रि रि करती है।

रिणी, तुम मुझे ये सब बातें आज इस तरह क्यों कह रही हो ? इससे मेरा मन नहीं बहलेगा, सिर्फ अहंकार बढ़ेगा। मुझमें अहंकारका नशा यों भी काफी है, उसकी मात्रा और बढ़ानेमें तुम्हें क्या लाभ होगा ?

सु, जिस रूपने मुझे मुग्ध कर रखा है वह तुम्हारी देहका रूप है या मनका, मैं यह नहीं जानती। तुम्हारे मन और चरित्रका कुछ अंश अति स्पष्ट है, और कुछ अंश अति अस्पष्ट है। तुम्हारे चेहरेपर उसी मनकी छाप है। यही लाइट और शेडसे आँकी हुई तसवीर मेरी आँखोंको इतनी सुंदर लगती है, मेरे मनको इतना खींचती है। खैर, वह जो कुछ भी हो, आज मैं तुम्हें सच ही कह रही हूँ और सच ही कहूँगी, हालाँकि तुम्हारे अहंकारकी मात्रा बढ़ानेमें मेरा नुकसान ही है, लाभ नहीं।

क्या नुकसान है ?

तुम जानो या न जानो, मैं जानती हूँ कि तुमने मुझसे जितना निष्ठुर व्यवहार किया है उसकी जड़में तुम्हारे अहंके सिवा और कुछ नहीं था।

निष्ठुर व्यवहार मैंने किया ?

हाँ तुमने। —पहलेकी बात जाने दो, यह एक महीना तुम जानते हो मैंने कितने कष्टसे काटा है। प्रतिदिन जब डाकिया आकर दरवाजेपर दस्तक देता था तो मैं भागी जाती थी कि तुम्हारी चिट्ठी आई या नहीं। दिन भरमें दस बार तुमने मेरी आशा तोड़ी है। अंतमें यह अपमान और सहन न कर सकनेके कारण मैं लंदनसे यहाँ भाग आई।

अगर सचमुच ही इतना कष्ट पाया है तो यह कष्ट तुमने जानकर भोगा है।

क्यों ?

मुझे लिखते ही तो मैं तुमसे मिल सकता था।

इस बातसे ही तो तुम पकड़ाई दे गये। तुम अपना अहंकार नहीं छोड़ सकते, लेकिन मुझे तुम्हारे लिये उसे छोड़ना जरूरी है। अंतमें हुआ भी वही। अपना अहंकार चूर करके तुम्हारे पैरोंमें रख दिया है इसीलिए आज तुम अनुग्रह करके मुझे दर्शन देने आए हो।

इसके जवाबमें मैंने कहा, तुम्हें कष्ट हुआ है ? तुम्हारे साथ मुलाकात होनेके बाद मेरे दिन कितने आरामसे कटे हैं यह भगवान् ही जानता है।

इस धरतीपर एक जड़ पदार्थको छोड़कर और किसीको आरामसे रहनेका अधिकार नहीं है। मैंने तुम्हारे जड़ हृदयको जीवन्त कर दिया है, यही तो मेरा अपराध है ! तुम्हारे हृदय-के तारपर मींड़ देकर कोमल सुर बजाना पड़ता है। इसीको अगर तुम पीड़न करना कहते हो तो मुझे कुछ और नहीं कहना।

इसी समय हमने वनमेंसे बाहर आकर देखा कि सामने दिगंत तक फैली हुई गोधूलि-धूसर जलकी मरुभूमि धू-धू कर रही है। उस समय आसमानमें प्रकाश था। उसी विमर्श प्रकाशमें देखा कि रिणीका चेहरा गम्भीर चिन्तनसे भाराक्रान्त हो रहा है। वह एकटक समुद्रकी तरफ देख रही है, लेकिन उस दृष्टिका कोई लक्ष्य नहीं है। उन आँखोंमें जो कुछ था वह इसी समुद्रकी तरह एक असीम और उदास भाव था।

रिणीने मेरा हाथ छोड़ दिया और हम दोनों बालूपर पास-पास बैठकर समुद्रकी तरफ देखते रहे। कुछ देर चुप रहनेके बाद मैंने कहा, रिणी, तुम क्या मुझसे सचमुच ही प्रेम करती हो ?

करती हूँ।

कबसे ?

जिस दिन तुमसे पहली मुलाकात हुई उसी दिनसे। मेरे मनका यह स्वभाव नहीं है कि वह धुँधाता धुँधाता जल उठे। यह मन मुहूर्त भरमें दपसे जल उठता है, लेकिन वह आग फिर जीवन भर फिर नहीं बुझती। और तुम ?

तुम्हारे बारेमें मेरे मनोभाव इतने बहुरूपी हैं कि उन्हें कोई एक नाम नहीं दिया जा सकता। जिसका परिचय मुझे खुद ही अच्छी तरह नहीं है, तुम्हें वह क्या कहकर बताऊँ ?

अपने मनकी बात तुम जानो या न जानो, मैं जानती थी।

मैं नहीं जानता था यह बात सच है, किन्तु तुम जानती थीं या नहीं, यह नहीं कह सकता।

मैं जानती थी यह प्रमाणित कर सकती हूँ। तुम सोचते थे कि मेरे साथ तुम सिर्फ मनका खेल कर रहे हो।

यह ठीक है।

और इस खेलमें तुम्हें जीतनेकी ऐसी ज़िद थी कि तुमने यह प्राणपण कर लिया था।

यह भी ठीक।

यह कब समझे कि यह सिर्फ खेल नहीं है ?

आज।

कैसे ?

जब तुम्हें स्टेशनपर देखा तब तुम्हारे मुखपर मैंने अपने मनका चेहरा देखा ।

इतने दिनों तक उसे क्यों नहीं देख पाये ?

तुम्हारे मन और मेरे मनके बीच तुम्हारे अहंकार और मेरे अहंकारका एक दोहरा पर्दा था । तुम्हारे मनके पर्देके साथ ही साथ मेरे मनका पर्दा भी उठ गया है ।

तुम मुझे कितना चाहते हो, यह भी मैं तुमसे नहीं पूछूँगी ।

क्यों ?

वह भी मैं जानती हूँ ।

कितना ?

जीवनसे भी ज्यादा । जब तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं तुम्हें नहीं चाहती तो तुम्हारे लिए विश्व शून्य हो जाता है, जीवनका कोई अर्थ नहीं रहता ।

यह सत्य कैसे जाना ?

अपने मनसे ।

इतना कहकर रिणी खड़ी होकर बोली, रात हो गई है, मुझे घर जाना है, चलो तुम्हें स्टेशन तक पहुँचा आऊँ । रिणी रास्ता बताती हुई आगे चलने लगी और मैं चुपचाप उसका अनुसरण करता हुआ चलने लगा ।

दसेक मिनट बाद रिणी बोली, हम लोग इतने दिनोंसे जिस नाटकका अभिनय कर रहे हैं, आज उसकी समाप्ति होनी चाहिए ।

मिलनान्त या वियोगान्त ?

यह तुम्हारे हाथमें है ।

मैंने कहा, जो महीने भर भी एक दूसरेको छोड़कर नहीं

रह सकते उनके लिए जीवन भर एक दूसरेके बिना रह सकना क्या संभव है ?

तब एकत्र रहनेके लिए उन्हें क्या करना होगा ?

विवाह।

तुम क्या सब तरफसे सोच विचारकर यह प्रस्ताव कर रहे हो ?

मुझमें और किसी तरफसे सोचने विचारनेकी क्षमता नहीं है। मैं इतना ही जानता हूँ कि तुम्हें छोड़कर मैं एक दिन भी नहीं रह सकूंगा।

तुम रोमन केथोलिक हो सकोगे ?

यह सुनते ही मुझपर आसमान टूट पड़ा। मैं कुछ उत्तर नहीं दे सका।

इसका जवाब सोचकर तुम कल देना। अब और समय नहीं है, वह देखो तुम्हारी ट्रेन आ रही है—जल्दीसे टिकट खरीद लाओ, मैं प्लेटफार्मपर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ।

मैं झटपट टिकट खरीद लाया, पर देखता क्या हूँ कि रिणी अदृश्य हो गई है। मैं एक फर्स्ट क्लासके डब्बेमें चढ़ ही रहा था कि देखा उसमेंसे जार्ज उतर रहा है। मेरे ट्रेनपर चढ़ते-चढ़ते गाड़ी रवाना हो गई।

मैंने जंगलेमेंसे मुँह निकालकर देखा कि रिणी और जार्ज साथ साथ चले जा रहे हैं।

उस रात, उन्मादके रोगीके दिमागकी जो अवस्था होती है वही मेरी हो गई थी—अर्थात् मैं सोया भी नहीं और जागता भी नहीं रहा।

दूसरे दिन सुबह घरसे निकलते ही नौकरने एक चिट्ठी मेरे हाथमें दी। चिट्ठीके सरनामेसे मालूम पड़ा कि रिणीके हस्ताक्षर हैं।

खोलकर जो कुछ पढ़ा वह यह है—

इस समय रातके बारह बजे हैं। लेकिन एक ऐसी खुशखबर है कि इसी समय तुम्हें दिये बिना नहीं रह सकी। मैं एक सालसे जो चाह रही थी वह आज हो गया। जॉर्जने आज मुझसे विवाह करनेका प्रस्ताव किया है और मैं इसपर राजी हो गई हूँ। इसके लिए धन्यवाद विशेष तौरपर तुम्हें ही मिलना चाहिए। कारण यह कि जॉर्जके समान पुरुषके मनमें मुझ जैसी रमणीको पानेका जिस प्रकार लोभ होता है, लेनेमें भी उसी प्रकार डर रहता है। इसीलिए उन्हें मन स्थिर करनेमें इतनी देर लगती है कि अगर हम सहायता न करें तो वह मन कभी स्थिर ही नहीं हो। उनके लिए प्रेमका अर्थ है जेलेसी, उनके मनमें जितनी जेलेसी बढ़ती है, वे समझते हैं कि वे उतना ही ज्यादा प्रेम करते हैं। स्टेशनपर तुम्हें देखते ही जॉर्ज उत्तेजित हो उठा, इसके बाद जब सुना कि मेरी एक बातका जवाब तुम्हें कल देना है, तब तो और देर किये बिना उसने हमारा विवाह निश्चित कर डाला। इसके लिए मैं तुम्हारी चिरकृतज्ञ रहूँगी, और तुम भी मेरे निकट चिरकृतज्ञ रहना। क्योंकि तुम क्या पागलपन करनेवाले थे, यह बादमें समझोगे। मैं वास्तवमें आज तुम्हारी सेवियर हो गई हूँ। तुमसे मेरा अन्तिम अनुरोध यही है कि तुम अब मुझसे मिलनेकी चेष्टा मत करना। मैं जानती हूँ कि अपना नया जीवन आरंभ करनेके बाद दो दिनमें ही मैं तुम्हें भूल जाऊँगी, और तुम मुझे ... तो मिस हिल्डेसहाइमरको खोजकर उसके

साथ विवाह कर लेना। वह आदर्श स्त्री होगी इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। इसके अलावा, मैं अगर जॉर्जके साथ ब्याह करके सुखपूर्वक रह सकती हूँ तो तुम मिस हिल्डेसहाइमरके साथ सुखपूर्वक क्यों नहीं रह सकोगे, यह मेरी समझमें नहीं आता। बड़े जोरका सिरदर्द है, और नहीं लिख सकती।

इस प्रसंगमें मैं या जॉर्ज कौन ज्यादा कृपाका पात्र है, यह मैं आज भी नहीं समझ पाया।

यह सुनकर सेनने हँसकर कहा, देखो सोमनाथ, तुम्हारे अहंकारने ही इस विषयमें तुम्हें निर्बोध कर रखा है। इसमें समझने जैसी और:क्या बात है ? साफ दिखाई दे रहा है कि तुम्हारी रिणीने तुम्हें बन्दर नाच नचाया है और ठगा है—सीतेशको उसने जिस प्रकार ठगा था। सीतेशका मोह सिर्फ एक घंटेका था, तुम्हारा मोह अभी तक नहीं टूटा। जिस बातको स्वीकार करनेका साहस सीतेशमें है, वह तुममें नहीं है और तुम्हारा अहंकार रोकता है।

सोमनाथने जवाब दिया, इसको तुम जितना सहज समझते हो उतना सहज नहीं है। इसके बारेमें कुछ और सुनो। मैं रिणीका पत्र पढ़नेके बाद पेरिस गया। यह तय कर लिया था कि जब तक मेरे प्रवासकी मियाद समाप्त नहीं होती तब तक वहीं रहूँगा, और लन्दन सिर्फ इनकी टर्म पूरी करनेके लिए सालमें चार बार जाऊँगा, और हर खेपमें छह दिन ठहरूँगा। महीनेक भर बाद, एक दिन शामको होटलमें बैठा था कि क्या देखता हूँ अचानक रिणी आ उपस्थित हुई। मैं उसे देखकर चौंक उठा और बोला, क्या

तुमने जॉर्जसे शादी नहीं की, मुझे सिर्फ झाँसा देनेके लिए चिट्ठी लिखी थी ?

उसने हँसकर जवाब दिया; शादी नहीं की होती तो हनीमूनके लिए पेरिस कैसे आती ? तुम्हारा पता लगाकर, तुम यहाँ हो यह जानकर, मैं जॉर्जको समझा बुझाकर लाई हूँ। आज वे अपने एक मित्रके यहाँ डिनर पर गये हैं, और मैं गुपचुप तुमसे मिलने आ गई हूँ।

वह साँझ तो उसने मेरे साथ बातचीतमें काटी। बातें थीं उसके ब्याहकी रिपोर्ट। मुझे बैठे-बैठे उसके ब्याहकी छोटी-बड़ी सब विगतें सुननी पड़ीं। जाते समय वह बोली, उस दिन तुमसे अच्छी तरह विदा नहीं ले सकी थी। बादमें तुम कहीं मुझ पर नाराज हो जाओ, इसीलिए आज मिलने आई हूँ। लेकिन यह तुम्हारे साथ मेरी आखिरी मुलाकात है।

सोमनाथकी कहानी पूरी होते न होते सीतेश कुछ अधीरतासे बोला, देखो, ये सब बातें तुमने अभी अभी बनाकर कही हैं। तुम भूल गये कि कुछ देर पहले तुमने कहा था कि वही B में तुम्हारी रिणीके साथ आखिरी मुलाकात थी। तुम्हारी झूठी बात हाथों हाथ पकड़ाई दे गई है।

सोमनाथने जरा भी इधर उधर किये विना जवाब दिया, पहले जो कहा था वही झूठ है, और अब जो कहा है यही सच है। कहानी-का एक अंत होना चाहिए इसीलिए मैंने इस जगह अंत किया था। लेकिन असली जीवनमें ऐसी अनेक घटनाएँ घटती हैं जिनका इस प्रकार अन्त नहीं होता। वह पेरिसकी मुलाकात

भी आखिरी मुलाकात नहीं है, इसके बाद लंदनमें रिणीके साथ मेरी कई बार इसी तरह आखिरी मुलाकात हुई है।

सीतेशने कहा, तुम्हारी बात मेरी समझमें नहीं आ रही है। इसका कोई अन्त हुआ या नहीं हुआ ?

हुआ।

कैसे ?

ब्याहके सालभर बाद ही जॉर्जके साथ रिणीका तलाक हो गया। अदालतमें साबित हुआ कि जॉर्जने रिणीको मारना शुरू कर दिया था—वह भी शराबके नशेमें नहीं प्रेमके उन्मादमें। इसके बाद रिणीने स्पेनके एक कॉनवेंटमें हमेशाके लिए शरण ले ली।

सीतेश बहुत ही उत्तेजित होकर बोला, जॉर्जने उसके प्रति ठीक व्यवहार किया। मैं होता तो यही करता।

सोमनाथ बोला, संभवत. उस अवस्थामें मैं भी यही करता। यह धर्मज्ञान और बलवीर्य हम सभीमें है। इसीलिए तो दुर्बलके लिए—O crux ! ave unica spera (हे क्रास ! तुम्हीं जीवनके एकमात्र भरोसे हो।) यही मानव मनकी अन्तिम कहानी है।

सीतेशने जवाब दिया, तुम्हारा यह विश्वास है कि रिणी एक अबला है। जानते हो वह क्या है ? एक साथ चोर और पागल।

सोमनाथने इस बीचमें एक सिगरेट जलाकर आसमानकी तरफ देखा और अम्लान मुखसे कहा—मैं एक विशेष अनुकम्पाका पात्र होऊँ, ऐसा तो मुझे नहीं लगता। क्योंकि दुनियामें जो प्रेम

सच्चा है, उसमें पागलपन और प्रवंचना दोनों ही रहते हैं, यही तो उसका रहस्य है।

सीतेशके कानोंको यह बात इतनी अद्भुत और इतनी निष्ठुर लगी कि इसे सुनकर वह एकदम हतबुद्धि हो गया। क्या उत्तर दे, यह सोच न पाकर अवाक् हुआ बैठा रहा।

सेन बोला, वाह सोमनाथ वाह! इतनी देर बाद एक बात-सी बात कही है। इसमें जिस प्रकार नवीनता है उसी प्रकार बुद्धिका खेल भी है। हम लोगोंमें तुम्हीं एक हो जो मनोजगतमें नित्य नये सत्यका आविष्कार कर सकते हो।

सीतेश और धीरज न रख सका और बोल उठा, स्यानी बिल्ली चूहोंसे मुँह नुचवाती है—यह कहावत कहाँतक सच है यह तुम्हारे इन सब प्रलापोंको सुनकर अच्छी तरह समझमें आती है।

सोमनाथ अपनी बातका प्रतिवाद नहीं सह सकते थे, कोई अगर उनकी पूँछपर पैर रख दे तो वे फौरन ही उलटकर फन मारते थे और साथ ही साथ जहर उगल देते थे। जिस बात-को वे सानपर चढ़ाकर कहते थे वह प्रायः जहर बुझे तीरकी तरह लोगोंके कलेजेको छेद देती थी।

सोमनाथके मतके साथ उसके चरित्रका कोई विशेष मेल नहीं था, इसका प्रमाण तो उसकी प्रणय-कहानीसे ही स्पष्ट मिल जाता है। गरल उसके कंठमें भले ही हो पर हृदयमें नहीं था। अस्थिके समान कठोर सीपमें जिस प्रकार जेलीकी-सी कोमल देह रहती है उसी प्रकार सोमनाथके अत्यन्त कठोर मतामतके भीतर अत्यन्त कोमल मनोभाव छिपा रहता था। इसीलिए उसका

मलामत सुनकर हमें हृत्‌कम्प नहीं होता था, जो होता था वह है ईषत् चित्त-चांचल्य। क्योंकि उसकी बात कितनी ही अप्रिय क्यों न हो, पर उसके भीतरसे एक सत्यका चेहरा झाँका करता था—जिस सत्यको हम लोग देखना नहीं चाहते, उसे देख नहीं पाते।

इतनी देर हम लोग कहानी कहने और सुननेमें इतने लीन थे कि बाहरकी तरफ देखनेकी फुरसत हममेंसे किसीको नहीं थी। सब लोग जब चुप हुए तो मैंने आसमानकी तरफ नज़र उठाकर देखा, बादल छँट गये हैं और चाँद निकल आया है। उसके प्रकाशसे चारों दिशाएँ भर गई हैं और वह चाँदनी इतनी निर्मल इतनी कोमल है कि मुझे ऐसा लगने लगा मानो विश्व अपना सीना खोलकर हमें दिखा रहा है कि उसका हृदय कितना मधुर और कितना करुण है। प्रकृतिका यह रूप हम लोग देख नहीं पाते इसीलिए हमारे मनमें भय और भरोसा, संशय और विश्वास दिन-रातकी तरह बारी बारीसे रोज आते और जाते हैं।

इसके बाद मैंने अपनी कहानी शुरू की।

४—मेरी कहानी

सोमनाथका कहना है कि Love is both a mystery and a joke। यह बात एक हिसाबसे सच है यह तो हम सभी स्वीकार करनेके लिए बाध्य हैं। क्योंकि इस प्रेमको लेकर मनुष्य कविता भी लिखता है और रसिकता (हास्य-विनोद) भी करता है। वह कविता अगर अपार्थिव हो और हास्य अश्लील हो, तो भी समाज कोई आपत्ति नहीं करता। दान्ते और बोकेशियो दोनों ही एक युगके लेखक थे—सिर्फ इतना ही नहीं एक गुरु था तो दूसरा शिष्य। डान जुआन और एपिसिकिडियन, दोनों कवि-बन्धु एक ही कमरेमें पास-पास बैठकर लिखते थे। साहित्य समाजमें इन सब पृथक्‌पंथी लेखकोंका समान आदर है, यह बात तो तुम सभी जानते हो।

यह सुनकर सेन बोले, बायरन और शैली इन दोनोंने काव्य एक ही समय साथ साथ बैठकर लिखा था, यह बात मैंने आज पहली बार सुनी है !

मैंने जवाब दिया, अगर नहीं लिखा है तो उनका लिखना उचित था। खैर जो कुछ भी हो, तुम लोगोंने जो घटनाएँ सुनाई हैं उन पर मैं तीन बहुत ही सुन्दर हास्यरसकी कहानियाँ लिख सकता हूँ जिसे पढ़कर लोगोंको बड़ी खुशी होती। सेनने कवितामें जो कुछ पढ़ा है उसीको जीवनमें पाना चाहा था, सीतेशने जीवन-में जो कुछ पाया था उसीको लेकर कविता करनी चाही थी, और

हमलोगोंने मानव-जीवनसे उसके हास्य अंशको दूर करके जीवन यापन करना चाहा था। परिणामस्वरूप दोनों ही एक सरीखे अहमक बन गये। किसी वैष्णव कविने कहा है कि जीवनका पथ प्रेमसे पिच्छल है, लेकिन यदि उस पथपर किसीका पैर फिसल जाता है, तो उसे देखकर मनुष्यको जो खुशी होती है वह और किसी वस्तुसे नहीं होती। लेकिन जो प्रेम असलमें हास्य-रसकी वस्तु है, तुम लोगोंने उसे दो-चार बूँद आँसूओंका जल मिलाकर करुण रसमें परिणत करके लेकर, उस वस्तुको इस प्रकार पुता दिया है कि समाजकी आँखोंमें वह कलुषित लग सकती है। क्योंकि समाजकी आँखें मनुष्यके मनको या तो सूर्यके प्रकाशमें देखती हैं या चाँदके। तुम लोगोंने आज बातें अपने मनका चेहरा जिस प्रकाशमें देखा है, वह आजकी रातका यह दुष्ट और क्लिष्ट प्रकाश है। उस प्रकाशका मायाजाल अब हमारी आँखोंके सामनेसे दूर हट गया है। अतएव मैं जो कहानी कहनेवाला हूँ, उसमें और कुछ हो या न हो, पर कोई हास्यकर या लज्जाकर पदार्थ नहीं है।

इस कहानीकी भूमिकाके लिए मेरी अपनी प्रकृतिका परिचय देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तुम लोगोंसे जो कुछ कहनेवाला हूँ वह मेरे मनकी कहानी नहीं है, किसी और व्यक्तिकी है, और वह भी एक रमणीकी और वह रमणी और जो कुछ हो, पर चोर या पागल नहीं है।

गत जून महीनेमें मैं कलकत्तेमें अकेला था। मेरे मकानसे तो तुम सभी परिचित हो। उस प्रकांड पुरीमें रातको सिर्फ दो व्यक्ति सोते थे—मैं और मेरा नौकर। बहुत दिनोंसे अकेले रहने-

का अभ्यास नहीं था, इसीलिए ठीक नींद नहीं आती थी। जरा-सा खटका या आवाज होते ही ऐसा लगता था मानो घरमें कोई आया है और सारा शरीर सिहर उठता था। और रातको ज़ानते तो हो, कितनी तरहकी आवाजें होती हैं—कभी छतपर, कभी दरवाजों खिड़कियोंपर, कभी रास्तेपर, कभी पेड़ोंपर। एक दिन इन्हीं निशाचर ध्वनियोंके उपद्रवसे रातको एक बजे तक जागता रहा, और फिर न जाने कब सो गया। सोते-सोते स्वप्न देखा मानो किसी टेली-फोनकी घंटी बज रही है। उसी समय नींद टूट गई। इसी समय घड़ीमें दो बजे। इसके बाद सुना कि टेलीफोनकी घण्टी लगातार बज रही है। मैं हड़बड़ाकर बिछौनेसे उठ बैठा। ख़याल हुआ कि मेरे आत्मीय स्वजनोंमेंसे शायद किसीपर कोई विशेष विपत्ति आई है इसीलिए वह इतनी रात गये मुझे खबर दे रहा है। मैं डरता डरता बरामदेमें आया, और देखा कि मेरा नौकर बेफिक्र सो रहा है। उसे जगाये बिना टेलीफोनका रिसीवर खुद ही उठाया और कानपर लगाकर कहा, हलो।

जवाबमें वही घण्टीकी भों भों आवाज आई। इसके बाद दो-चार बार हलो हलो करनेके बाद एक अत्यन्त मृदु और अत्यन्त मधुर कंठस्वर सुनाई दिया। जानते हो, वह कैसा स्वर था? गिर्जेके आर्गनका स्वर जब धीरे धीरे विलीन हो जाता है, और ऐसा लगता है मानो वह स्वर लाखों योजन दूरसे आ रहा है, ठीक उसी तरह।

धीरे धीरे वह स्वर स्पष्टसे स्पष्टतर हो उठा। मैंने सुना कि कोई अँग्रेजीमें पूछ रहा है—क्या आप मिस्टर राय हैं?

हाँ, मैं मि० राय हूँ।

एम० टी० ?

हाँ, किसे चाहते हो ?

आप ही को।

गलेके स्वर और उच्चारणसे समझ गया कि जो बात कर रही है वह एक अंग्रेज रमणी है।

मैंने प्रत्युत्तरमें पूछा कि तुम कौन हो ?

पहचाना नहीं ?

नहीं।

जरा ध्यान लगाकर सुनो, यह कंठस्वर तुम्हारा परिचित है या नहीं।

याद तो आता है कि यह कंठस्वर पहले सुना है, लेकिन फिर भी कहाँ और कब, यह किसी भी तरह ख़यालमें नहीं आ रहा है।

मैं अगर अपना नाम बताऊँ तो ख़याल आयगा ?

बहुत सम्भव है आ जाय।

मैं एनी हूँ।

एनी कौन ?

विलायतमें जिसे देखा था।

विलायतमें तो मैं कई एनियोंको जानता था। उस देशमें अधिकांश स्त्रियोंका यही नाम होता है।

ख़याल है, आप गॉर्डन स्क्वायरमें एक मकानमें दो कमरे किराये पर लेकर रहते थे।

ख़याल क्यों नहीं आयगा ? मैं दो साल उस मकानमें रहा था।

आखिरी सालकी बात याद है ?

अवश्य, यह तो हालकी ही बात है, दसेक साल हुए वहाँसे चला आया हूँ।

उसी साल उस मकानमें एनी नामकी एक दासी थी, ख़याल है ?

यह सुनते ही मेरे मनमें पूर्वस्मृति सब लौट आई। एनीका चित्र मेरी आँखोंके सामने आ गया।

मैंने कहा, खूब याद है। दासियोंमें तुम्हारे समान सुन्दरी मैंने विलायतमें कोई नहीं देखी।

मैं सुन्दरी थी यह जानती हूँ, लेकिन मेरा रूप आपकी आँखोंमें कभी पड़ा है यह नहीं जानती।

कैसे जानतीं ? मेरे लिए तुमसे यह कहना अभद्रता होती।

यह ठीक है। आपमें और मुझमें सामाजिक अवस्थाका अलंघ्य व्यवधान था।

मैंने इसका कोई जवाब नहीं दिया। कुछ ठहरकर वह फिर बोली, मैं भी आज आपसे एक ऐसी बात कहूँगी जो आप नहीं जानते।

क्या है, बताओ ?

मैं तुमसे प्रेम करती थी।

सच ?

इतना सच कि दस सालकी परीक्षामें भी वह उत्तीर्ण हुआ है।

मैं यह कैसे जानता ? तुमने तो मुझसे कभी कहा नहीं।

तुमसे यह कहना मेरे लिए अभद्रता होती। इसके अलावा

यह वस्तु तो व्यवहारसे, चेहरेसे पकड़में आ जाती है। कमसे कम स्त्रियाँ यह बात मुँहसे नहीं कहतीं।

कहाँ, मैंने तो कभी कुछ लक्ष्य किया नहीं।

कैसे करते, तुमने क्या कभी मुँह उठाकर मेरी तरफ देखा है? मैं प्रतिदिन आधे घंटे तक तुम्हारे बैठनेका टेबल सजाती थी, तुम उस समय या तो अखबारसे अपना मुँह ढँके रहते थे, या सिर नीचा किये छुरीसे नाखून छीलते रहते थे।

यह बात तो ठीक है। इसका कारण यह है कि तुम्हारी तरफ विशेष नजर देना भी मेरे लिए अभद्रता होती। फिर भी समय समय पर यह अवश्य लक्ष्य किया है कि मेरे कमरेमें आनेपर तुम्हारा चेहरा सुर्ख हो उठता था और तुम कुछ घबरा-सी जाती थीं। मैं सोचता था कि यह भयसे होता है।

वह भयसे नहीं, लज्जासे होता था। लेकिन तुमने कुछ लक्ष्य नहीं किया, यही मेरे लिए अधिक सुखकर हुआ था।

क्यों?

तुम अगर मेरे दिलकी बात जान लेते, तो मैं फिर लज्जाके मारे अपना मुँह नहीं दिखा सकती। उस मकानसे भाग जाती। तब मैं तुम्हें प्रतिदिन नहीं देख पाती और तुम्हारे लिए कुछ कर भी नहीं पाती।

मेरे लिए तुमने क्या किया है?

उस अन्तिम साल तुम्हें एक दिनके लिए भी किसी चीजका अभाव हुआ है, एक दिन भी किसी असुविधामें पड़े हो?

नहीं।
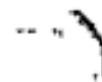
इसका कारण यह है कि मैंने प्राणपणसे तुम्हारी सेवा की है। जानते हो, जो तुमसे प्रेम नहीं करता, वह कभी तुम्हारी सेवा नहीं कर सकता।

क्यों भला ?

इसलिए कि तुम खुद अपने लिए कुछ नहीं कर पाते, और अपने लिए किसीको कुछ करनेके लिए कहते भी नहीं।

तुम मेरे लिए सब कुछ कर देती थीं, मैं तो यह नहीं जानता था। मैं तो सोचता था कि यह सब मिसेस स्मिथ करती हैं। इसीलिए आते समय तुमसे कुछ न कहकर मिसेस स्मिथको ही धन्यवाद देकर आया था।

मैं तुम्हारा धन्यवाद नहीं चाहती। तुमने मुझे कभी धमकाया नहीं, यही मेरे लिए यथेष्ट पुरस्कार था।

यह कैसी बात है ! स्त्रियोंको क्या कोई भला आदमी कभी धमकाता है ?

स्त्रियोंको भले ही न धमकाये, पर दासियोंको धमकाते हैं।

दासी क्या स्त्री नहीं है ?

दासियाँ जानती हैं कि वे स्त्रियाँ हैं, लेकिन भले आदमी यह भूल जाते हैं।

बात इतनी सत्य थी कि मैंने इसका कोई जवाब नहीं दिया। कुछ ठहरकर वह बोली, लेकिन एक दिन तुमने एक बड़ी ही निष्ठुर बात कही थी।

तुमसे ?

मुझसे नहीं, बल्कि अपने एक मित्रसे, लेकिन थी वह मेरे ही बारेमें।

तुम्हारे चोरीसे अपने किसी मित्रसे कोई बात कही हो यह तो ख्यालमें नहीं आता।

तुम्हारे निकट वह बात इतनी तुच्छ है कि तुम्हारे खयालमें आनेकी बात ही नहीं—लेकिन मेरे दिलमें तो वह हमेशाके लिए काँटेकी तरह चुभ गई है।

शायद सुननेपर याद आ जाय।

तुम एक दिन एक मोतीकी टाई-पिन लाये थे, दूसरे दिन वह फिर मिली नहीं।

हो सकता है।

मैं उसे सब जगह ढूँढ़ती फिर रही थी कि इतनेमें तुम्हारे एक मित्र तुमसे मिलने आये: तुमने उनसे हँसकर कहा कि, एनी वह चोरी करके ठगी गई है, क्योंकि वे मोती झूठे है और पिन पीतलकी है। एनी जब बेचने जायगी तब देखेगी कि उसकी कीमत एक पेनी है। इसके बाद तुम दोनों हँसने लगे। लेकिन इस एक बातसे ही तुमने वह पीतलकी पिन मेरी छातीमें चुभो दी थी।

हम लोग बिना सोचे समझे ऐसी.अन्यथा बातें अक्सर कह देते हैं।

मैं यह जानती थी, इसीलिए मुझे तुमपर गुस्सा नहीं आया—जो हुआ सो सिर्फ यंत्रणा थी। दारिद्र्यके कष्टसे भी ज्यादा उसका अपमान कष्टकर होता है, यही बात उस दिन मैंने अपने मर्मके मर्ममें अनुभव की। तुम कैसे जानोगे कि मैंने तुम्हारे लेवेंडरकी एक बूँद भी कभी चोरी नहीं की।

इसके जवाबमें मेरे लिए कहनेको कुछ नहीं है। अनजाने न जाने ऐसी बातोंसे कितने लोगोंके मनको दुखाया है।

तुम्हारी मोतीकी पिन किसने चुराई थी, यह मैंने बादमें आविष्कार किया।

किसने, बताओ ?

तुम्हारी लैंडलेडी मिसेस स्मिथने।

क्या कह रही हो ! वह तो मुझे माँकी तरह चाहती थी ! जिस दिन मैं आने लगा उस दिन उसकी आँखोंसे आँसू झर रहे थे।

हाँ, यह इसलिए कि उसकी बैंक फेल हो गई थी। तुम्हें वह एक रुपयेकी चीज देकर दो रुपये वसूल करती थी।

तो क्या मैं इतने दिन आँखें मूँदे हुए था ?

तुम लोगोंकी आँखें तुम्हारे दलसे बाहर नहीं जातीं, इसीलिए वे बाहरका भला-बुरा कुछ भी नहीं देख पातीं। खैर, यह जो कुछ भी हो, मैं तुम्हारी एक चीज बिना पूछे लेती थी—किताब, और उसे पढ़कर लौटा देती थी।

तुम क्या पढ़ना जानती थीं ?

क्या भूल गये कि हम सभी बोर्ड स्कूलमें लिखना-पढ़ना सीखती थीं ?

हाँ, यह तो सत्य है।

जानते हो, चोरी करके क्यों पढ़ती थी ?

नहीं।

भगवान्‌ने मुझे रूप दिया था, उसे मैं जतनसे बना सँवारकर रखती थी।

हाँ, यह जानता हूँ। तुम्हारे सरीखी साफ-सुथरी सुघर दासी मैंने विलायतमें नहीं देखी।

तुम जो नहीं जानते वह यह कि— भगवान्‌ने मुझे बुद्धि भी दी थी। उसे भी मैं बना सँवारकर रखनेकी चेष्टा करती थी, और यह दोनों बातें तुम्हारे ही लिए करती थी।

मेरे लिए ?

हाँ, साफ-सुथरी रहती थी इसलिए कि मुझे देखकर तुम नाक न सिकोड़ो, और किताबें पढ़ती थी इसलिए कि तुम्हारी बातें अच्छी तरह समझ सकूँ।

मैं तो तुमसे कभी बातें नहीं करता था।

मुझसे नहीं करते थे। लेकिन खानेके समय टेबलपर जब अपने मित्रोंसे तुम बातें करते थे तब वे मुझे सुननेमें बड़ी अच्छी लगती थीं। वे तो बातें नहीं थीं, भाषाकी आतिशबाजी थीं। मैं अवाक् हुई सुनती थी, लेकिन सब अच्छी तरह समझ नहीं पाती थी। क्योंकि तुम लोग जिस भाषामें बात-चीत करते थे वह किताबी अंग्रेजी होती थी। वही अंग्रेजी अच्छी तरह सीखनेके लिए मैं चोरी करके किताबें पढ़ती थी।

वे सब किताबें समझ लेती थीं ?

मैं सिर्फ कहानीकी पुस्तकें पढ़ती थीं। शुरूमें तो जगह-जगह कठिन लगती थीं, लेकिन बादमें अभ्यास हो जानेपर कहीं कठिनाई नहीं होती थी।

कैसी कहानियोंकी किताबें तुम्हें अच्छी लगती थीं ? जिनमें चोर-डाकू खून-खराबीकी बातें होती थीं वे ?

नहीं, जिसमें प्रेमकी बातें होती थीं वे। खैर, यह जो कुछ भी हो, लेकिन तुमसे प्रेम करके तुम्हारी दासीका यह उपकार

हुआ कि वह देह और मनसे भद्र महिला हो गई। इसके परिणामस्वरूप ही उसका भावी जीवन इतना सुखी हुआ।

मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई।

लेकिन शुरूमें इसके लिए मुझे बड़े कष्ट भोगने पड़े।

क्यों ?

तुम्हें याद है कि चले आनेके समय तुमने कहा था कि तुम साल भर बाद लौट आओगे ?

यह भद्रताके लिए कहा था, क्योंकि मिसेस स्मिथ बहुत दुःख मान रही थी इसीलिए उसे ढाढ़स देनेके लिए।

लेकिन मैंने उस बातपर विश्वास कर लिया।

तुम क्या इतनी भोली थीं ?

मेरे दिलने मुझे भोला बना दिया था। तुमसे फिर मिलनेकी आशा छोड़ देनेपर जीवनमें मेरे लिए और कुछ अवलम्ब नहीं था।

उसके बाद ?

तुम जिस दिन चले आये उसके दूसरे ही दिन मैंने मिसेस स्मिथसे विदा ले ली।

मिसेस स्मिथने तुम्हें बिना नोटिसके जाने दिया ?

नहीं, मैंने बिना नोटिसके उसे छोड़ दिया। उस मसानपुरीमें मैं एक दिन भी नहीं रह सकी।

उसके बाद क्या किया ?

इसके बाद सालभर तक जहाँ जहाँ तुम्हारे देशके लोग रहते थे, उन सब घरोंमें नौकरी की—इस आशासे कि तुम्हारे लौट

आनेकी मुझे खबर मिलेगी। लेकिन कहीं भी एक महीनेसे ज्यादा नहीं रह सकी।

क्यों, क्या वे तुम्हें डाँटते थे, गाली देते थे?

नहीं, कटुवाक्य नहीं कहते थे, मीठी बातें करते थे, इसलिए। तुमने जो कुछ किया—अर्थात् उपेक्षा—उन्होंने किसीने वह नहीं की। मेरे प्रति उन लोगोंका विशेष ध्यान देना ही मुझे खास तौरसे असह्य था।

मीठी बातें औरतोंको कड़वी लगती हैं, यह तो मैं पहले नहीं जानता था।

मैं मनसे अब दासी नहीं रही थी, इसीलिए मुझे स्पष्ट दिखता था कि उनकी भद्र बातोंके पीछे जो मनोभाव है वह जरा भी भद्र नहीं है। फिर भी अपना रूप, यौवन और दारिद्र्य लेकर समस्त विपदाओंसे बचकर निकल आई। जानते हो, किसकी सहायतासे?

नहीं।

मैं अपने शरीरपर एक ऐसा रक्षा-कवच धारण कर लेती थी जिसकी वजहसे कोई पाप मुझे स्पर्श नहीं कर पाता था।

वह क्या क्रास?

विशेषतः मेरे लिए वह क्रास ही था, और किसीके लिए नहीं। तुमने चलते समय मुझे जो एक गिन्नी बकसीस दी थी उसीको मैंने एक काले फीतेमें पिरोकर गलेमें पहन ली। मेरे हृदयमें जो प्रेम था, उसीके बाह्य निदर्शनरूप वह स्वर्णमुद्रा मेरी छातीपर पड़ी रहती थी। एक मुहूर्तके लिए भी मैंने उसे शरीरसे

अलग नहीं किया, यद्यपि ऐसे भी दिन आये कि मेरे पास खानेको भी नहीं था।

क्या ऐसा भी एक दिन आया है जब तुम्हें उपासा रहना पड़ा है?

एक दिन नहीं, कई दिन। जब नौकरी छूट जाती तो गाँठके पैसे समाप्त होते ही मुझे उपवास करना पड़ता।

क्यों, तुम्हारे मा-बाप, भाई-बहन आत्मीय-स्वजन क्या कोई नहीं थे?

नहीं, जन्म लेनेके बादसे ही मैं एक Founding Hospital में बड़ी हुई हूँ।

कितने साल तुम्हें यह दुःख भोगना पड़ा?

एक साल भी नहीं। तुम्हारे चले आनेके दसेक महीने बाद मुझे ऐसी बीमारी हुई कि मुझे अस्पतालमें जाना पड़ा। वहीं मुझे इन सब कष्टोंसे छुटकारा मिला।

तुम्हें क्या हुआ था?

यक्ष्मा।

रोगकी भी तो एक यन्त्रणा होती है।

यक्ष्माकी पहली अवस्थामें शरीरको कोई कष्ट नहीं होता, बल्कि कुछ होता है तो वह आराम। इसीलिए जितने महीने अस्पतालमें थी वे मेरे बड़े मजेमें कट गये थे।

मरणापन्न बीमारी लेकर अस्पतालमें अकेले पड़े रहना भी सुखकर हो सकता है, यह बात आज पहली बार सुनी है।

इस बीमारीकी पहली अवस्थामें मृत्युका भय नहीं रहता। उस समय ऐसा लगता है कि इससे प्राण हठात् एक दिनमें नहीं बुझ

जायेंगे। बल्कि ये प्राण दिनपर दिन क्षीणसे क्षीणतर होकर अनजानेमें अन्धकारमें विलीन हो जायेंगे। यह मृत्यु बहुत कुछ सो जाने जैसी होती है। इसके अलावा शरीरकी उस अवस्थामें शरीरको कोई काम नहीं रहता इसलिए दिन भर सपने देखे जा सकते हैं—मैं इसीलिए सिर्फ सुख-स्वप्न देखा करती थी।

किसके ?

तुम्हारे। मुझे ऐसा लगता कि शायद एक दिन इस अस्पतालमें मुझसे मिलनेके लिए आओगे। मैं रोज तुम्हारी प्रतीक्षा करती थी।

इसकी कोई सम्भावना नहीं, यह क्या नहीं जानती थीं ?

यक्ष्मा रोगमें मनुष्यकी आशाएँ असंभव रूपसे बढ़ जाती हैं। जो कुछ भी हो, पर, अगर तुम आते तो मुझे देखकर खुश होते।

तुम्हारा वह रुग्ण चेहरा देखकर मैं खुश होता, यह अजीब बात तुम्हारे मनमें क्योंकर उठी ?

उस इटालियन पेंटरका नाम क्या है जिसके चित्रको तुम रखना पसन्द करते थे और जिसे दीवालपर टाँग रखा था ?

बोटिचेल्ली।

हाँ, तुम आते तो देखते कि मेरा चेहरा बोटिचेल्लीके चित्रके समान ही हो गया था। हाथ-पैर पतले पतले और लम्बे लम्बे थे। मुँह पतला, दोनों आँखें बड़ी बड़ी और आँखोंके तारे जिस प्रकार तरल उसी प्रकार उज्ज्वल थे। मेरा रंग हाथी दाँतके समान हो गया था, और जब ज्वर आता तो दोनों गाल किंचित् लाल हो जाते थे। मैं जानती हूँ कि वह चेहरा तुम्हारी आँखोंको बड़ा सुन्दर लगता।

तुम कितने दिन अस्पतालमें रहीं ?

ज्यादा दिन नहीं। जो डाक्टर मेरा इलाज करते थे उन्होंने महीने भरके बाद आविष्कार किया कि मुझे यक्ष्मा नहीं हुआ, ठंड और अनाहारसे शरीर टूट गया था। उनके जतन और सुचिकित्सा-से मैं तीन महीनेके भीतर ही अच्छी हो गई।

उसके बाद ?

उसके बाद जब अस्पतालसे मुक्त होनेका समय हुआ, तब डाक्टरने आकर मुझसे पूछा कि तुम यहाँसे निकलकर क्या करोगी ? मैंने जवाब दिया—दासीगीरी। वे बोले, तुम्हारा शरीर जब एक बार टूट चुका है तब जीवनमें वैसा परिश्रम तुमसे नहीं हो सकेगा। मैंने कहा—कोई दूसरा चारा नहीं। उन्होंने प्रस्ताव किया कि अगर तुम नर्स होना चाहो तो उसके लिए जो कुछ खर्च लगेगा वह मैं दूँगा। उनकी बात सुनकर मेरी आँखोंमें पानी आ गया, क्योंकि जीवनमें मैंने यही सबसे पहली बार सहृदयताकी बात सुनी थी। मैंने उनका प्रस्ताव मान लिया। इतनी जल्दी राजी होनेका एक और भी कारण था।

क्या ?

मैंने सोचा कि नर्स होकर कलकत्ते जाऊँगी और तब तुमसे फिर मुलाकात हो सकेगी। तुम्हारे बीमार पड़नेपर तुम्हारी सेवा करूँगी।

मैं बीमार पड़ूँगा, यह बात तुम्हारे मनमें क्यों उठी ?

सुन रखा था कि तुम लोगोंका देश बड़ा ही अस्वास्थ्यकर है। वहाँ सभी समय सब लोगोंको बीमारी होती है।

इसके बाद सचमुच ही नर्स हो गईं ?

हाँ। इसके बाद उसी डाक्टरने मेरे साथ विवाह करनेका प्रस्ताव किया। मैंने अपना मन और प्राण अपने अन्तरकी गम्भीरतम कृतज्ञताके निदर्शनस्वरूप उनके हाथमें समर्पित कर दिये।

तुम्हारा विवाहित जीवन सुखी हुआ है ?

दुनियामें जितना सम्भव हो सकता है उतना हुआ है। अपने पतिसे मैंने जो कुछ पाया है वह है पद और संपद, धन और मान, असीम यत्न और अकृत्रिम स्नेह। एक दिन भी उन्होंने मेरा रंचमात्र अनादर नहीं किया, एक भी बातसे कभी मेरे मनको ठेस नहीं पहुँचाई।

और तुमने ?

मेरा विश्वास है कि मैंने भी मुहूर्त भरके लिए भी कभी उन्हें नाराज नहीं किया। उन्होंने तो मुझसे कुछ चाहा नहीं, उन्होंने चाहा सिर्फ मुझसे प्रेम करना और मेरी सेवा करना। पिता चिररुग्ण बेटीके साथ जो व्यवहार करता है, उन्होंने मेरे साथ वही व्यवहार किया था। अच्छी हो जाने पर भी मेरा शरीर पहले जैसा नहीं हो सका, वही बोटिचेल्लीका चित्रपट बनकर रह गया—और मेरे पति भी मेरे पिताकी ही वयसके थे। उनकी मैंने अपने समस्त हृदयसे देवताकी तरह पूजा की है।

आशा है, तुम्हारे विवाहित जीवनपर मेरी स्मृतिकी छाया नहीं पड़ी ?

तुम्हारी स्मृतिने हमारे जीवन और मनको कोमल कर रखा था।

यानी तुम मुझे भूली नहीं ?

नहीं। वही बात कहनेके लिए ही तो आज मैं तुम्हारे पास आई हूँ। तुम्हारे प्रति मेरे मनोभाव बराबर एक ही से रहे।

क्या यह कहना चाहती हो कि तुम अपने पति और मुझसे एक साथ प्रेम करती हो?

अवश्य। मनुष्यके मनमें अनेक प्रकारका प्रेम है जो परस्पर विरोध किये बिना एक साथ रह सकता है। यही देखो, लोग कहते हैं कि शत्रुसे प्रेम करना सिर्फ असंभव ही नहीं अनुचित है। लेकिन मैंने अभी हाल ही आविष्कार किया है कि शत्रु-मित्रका विचार किये बिना जो यंत्रणा भोगता है उसके प्रति ही लोगोंकी समान ममता और समान प्रेम हो सकते हैं।

इस सत्यका आविष्कार कहाँ किया?

फ्रांसके युद्धमें।

तुम वहाँ क्या करने गई थीं?

बताती हूँ। इस लड़ाईमें हम दोनों ही फ्रांसके युद्ध-क्षेत्रमें गये थे, वे डाक्टर होकर और मैं नर्स होकर। वहींसे सीधी तुम्हारे पास आई हूँ, जिस बातको कहनेका पहले सुयोग नहीं मिला, वही कहनेके लिए।

तुम्हारी बात मैं ठीकसे समझ नहीं पा रहा हूँ।

इसमें पहेली जैसा कुछ नहीं है। यही घंटे भर पहले तुम्हारी वह बोटिचेल्लेकी तसवीर एक जर्मन गोलेके आघातसे टूटकर छिन्न-भिन्न हो गई—और उसी समय मैं तुम्हारे पास चली आई हूँ।

तब तो इस समय तुम—?

परलोकमें हूँ।

इसके बाद टेलीफोन रखकर मैं घर चला आया। मुहूर्त भर-में मेरा शरीर और मन एक अस्वाभाविक तंद्रासे आच्छन्न हो आया। मैं सोते ही नींदमें डूब गया। इसके दूसरे दिन सुबह आँख खुलनेपर देखा कि दस बज गये हैं।

कहानी खत्म करनेके बाद मित्रोंके चेहरेकी तरफ देखा तो परियोंकी कहानी सुनते वक्त छोटे बच्चोंके मुँहपर जो भाव होता है, सीतेशके चेहरेपर वही भाव है। सोमनाथका चेहरा काठकी तरह सख्त हो गया है। समझ गया कि उन्होंने अपने मनके उद्वेगको जबरदस्ती रोक रखा है। और सेनकी आँखें ढुली जा रही हैं—नींदसे या भाव विभोरतासे, कहना कठिन है। किसीने न 'हाँ' की न 'हूँ'। कुछेक मिनट बाद बाहर गिर्जेकी घड़ीमें बारह बजते ही हम सब उठ खड़े हुए और 'बॉय'-'बॉय' करके चिल्ला पड़े, लेकिन किसीने प्रत्युत्तर नहीं दिया। कमरेमें जाकर देखा तो नौकर-चाकर सब फर्शपर बैठे-बैठे दीवालके सहारे सो रहे हैं। नौकरोंको किसी तरह उठाकर गाड़ी जोतनेके लिए कहने नीचे भेज दिया।

अचानक सीतेश बोल उठा, देखो राय, तुम एक लेखक हो; ये सब कहानियाँ कहीं पत्रोंमें न छपा देना, वर्ना हम लोग भद्र-समाजमें मुँह नहीं दिखा सकेंगे। मैंने जवाब दिया कि यह लोभ मैं संवरण नहीं कर सकूँगा—इससे तुम लोग मुझपर खुश होओ, चाहे नाखुश। सेनने कहा—मुझे कोई आपत्ति नहीं है, मैंने जो कुछ कहा वह आदिसे अन्ततक सब सच है, लेकिन लोग समझेंगे कि वह सब बनावटी है। सोमनाथने कहा, मुझे भी कोई आपत्ति नहीं है।

मैंने जो कुछ कहा वह आदिसे अन्ततक बनावटी है, लेकिन लोग समझेंगे कि वह सब सत्य है। मैंने कहा, मैंने जो कुछ कहा वह घटना घटी भी थी या मैंने स्वप्न देखा था, यह खुद मैं ही नहीं जानता। इसीलिए तो ये सब कहानियाँ लिखकर छपाऊँगा। दुनियामें दो तरहकी बातें हैं जिन्हें कहना अन्याय है—एक झूठ बात और एक सच बात। जो सच भी नहीं है, झूठ भी नहीं है और सम्भव है एक साथ दोनों है, उसे कहनेमें कोई बुराई नहीं है।

सीतेशने कहा, तुम्हारी बात अलग है। तुममेंसे एक कवि, एक फिलासफर, और एक साहित्यिक है, अतएव तुम्हारी कौन-सी बात सच और कौन-सी बात झूठ है, यह कोई नहीं समझ सकेगा। लेकिन मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ, हजारमें नौ सौ निन्यानवे लोग जैसे होते हैं वैसा ही। मेरी कहानी खालिस सत्य है, यह बात सभी पाठक अपने मन द्वारा जाँच सकेंगे।

मैंने कहा, यदि सबके मनकी बातसे तुम्हारे मनकी बात मेल खाती है, तब तो तुम्हारे मनकी बात प्रकाशित करनेमें तुम्हें लज्जा अनुभव करनेका कोई कारण नहीं है। सीतेश बोला,—वाह, तुमने यह खूब कहा। और पाँच व्यक्ति भी मेरी ही तरहके हैं, यह बात मन ही मन जान लेनेपर भी कोई मुँहसे स्वीकार नहीं करेगा, और मैं बीचमें फिजूल ही उपहासका पात्र बनूँगा। यह सुनकर सोमनाथने कहा, देखो राय, तब एक काम करो—सीतेशकी कहानी मेरे नामसे चला दो और मेरी कहानी सीतेशके नामसे। इस प्रस्ताव पर सीतेश अतिशय भयभीत

शेखर बोला, नहीं नहीं, मेरी कहानी मेरी ही रहने दो। इससे बहुत होगा तो दो आदमी मजाक कर लेंगे, लेकिन कैलनाथका पाप मेरे कन्धोंपर रखनेपर तो मुझे घर ही छोड़ देना पड़ेगा।

इसके बाद हम सबने अपने अपने स्थानको प्रस्थान किया।

जनवरी, १९१६

६०३

२-११-६८